बाईबिल के महापुरूष

बाईबिल के महापुरूष परिचयः

पुराने समय के परमेश्वर के लोग (पुरूष) आज उनके विश्वास के लिए जाने जाते है (इब्रानियों 11:1–2)। हम उनमें से केवल कुछ महापुरूषो के विषय में अध्ययन करेंगे। बाईबिल बताती है कि बाईबिल की प्रत्येक पुस्तक में लिखी हुई बाते हमारे निर्देशन और मार्गदर्शन के लिए है। प्रत्येक जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते है।

वे सब साधारण मनुष्य थे, जिनमे गलतियाँ करने की संभावना थी, गलत निर्णयों को लेते थे, गलत दृष्टिकोण, विश्वास की कमियाँ और यहां तक कि वे असफल भी हुए। उनमें से अधिकतर के पास कोई धर्मशास्त्र या अध्यात्मिक प्रशिक्षण नही था। उनके पास बस अपने जीवन के लिए एक बुलाहट थी; परमेश्वर के साथ एक आत्मिक अनुभव जिसने उन्हे स्वंय ही उसके अधिकार के अधीन कर दिया ताकि वे अपने जीवन के उन उद्देश्यो को पूरा कर सके जो परमेश्वर ने उनके लिए रखे थे। इब्रानियों अध्याय 11 और 12 में हम उनमें से बहुतो की एक सूची को पढ़ते है। हाबिल की भेंट ने यह सबूत दिया कि वह एक धर्मी व्यक्ति था तथा उसकी भेंट या उपहार को परमेश्वर ने स्वीकार किया। यद्यपि हाबिल बहुत पहले ही मर गया था तौभी वह अपने विश्वास के उदाहरण के कारण आज भी बात करता है। विश्वास ही से नूह ने उन बातो के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थी, चेतावनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिए जहाज बनाया और उसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया और उस धर्म का वारिस हुआ जो विश्वास से होता है। नूह की कहानी आने वाले बातो की ओर ईशारा भी करती है। परमेश्वर ने दुष्टता के साथ उचित व्यवहार किया अर्थात् उन्हे दण्ड दिया। परमेश्वर धर्मी और पवित्र है। वह पाप को दण्ड देता है। यीशु ने कहा, जैसा नूह के दिनो में था, वैसे ही न्याय की या दण्ड की एक बाढ़ आएगी (मत्ती 24:36–39)। परन्तु परमेश्वर फिर से अपने लोगो को बचाएगा। इब्रानियों 11:8 विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था; और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ; तौभी निकल गया। उत्पत्ति 13:15 में परमेश्वर यहोवा अब्राहम के साथ केवल उसके निजी और व्यक्तिगत क्षमता के साथ व्यवहार नही कर रहा था, बल्कि वह उस दृष्टिकोण के साथ बोल रहा था जो कि भावी लोगो (भविष्य की पीढ़ियो) को भी प्रभावित करेगा। उसके वंशज उस भूमि (देश) पर कई सदियों के लिए एक विशेष प्रजा के रूप में रहेंगे, जो कि परमेश्वर की प्रजा कहलाएंगे। उनके द्वारा सारी मानवजाति के उद्धार और फायदे के लिए आत्मिक ज्ञान के बीज बोए जाएंगे। ईश्वरीय बुद्धि (परमेश्वर के महान ज्ञान) के द्वारा सारे देशो में से उस देश को चुना गया जो कि ईश्वरीय प्रकाशन के लिए एक पालने (झूले) के समाने कार्य करेगा। जिसे सारे संसार के लिए रचा गया है। वहां पर अब्राहम ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई। उसके इस

भक्तिपूर्ण कार्य के द्वारा अब्राहम ने खुले तौर पर यह उद्घोषणा करी कि वह परमेश्वर से मिला था। और इस प्रकार से उसने सच्चे परमेश्वर की आराधना को भी स्थापित किया और उस वाचा (वायदे) के ऊपर अपने विश्वास की घोषणा करी। इब्रानियों 11:9 विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में, पराए देश में परदेशी के समान रहकर इसहाक और याकूब समेत जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिश थे, तम्बुओ में वास किया। इब्रानियों 11:10 क्योकि वह उस स्थिर नींववाले नगर की बाट जोहता था, जिसको रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है। इब्रानियों 11:11 विश्वास ही से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई, क्योकि उसने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा जाना था। इब्रानियों 11:12 इस कारण एक ही जन से, जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारो और समुद्र के तीर के बालू के समान अनगिनित वंश उत्पन्न हुए। इब्रानियों 11:13 ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नही पाई; पर उन्हे दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी है। इब्रानियों 11:14 जो ऐसी बाते करते है, वे प्रगट करता है कि स्वदेश की खोज में है। विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आनेवाली बातो के विषय में आशीष दी। इब्रानियों 11:21 विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनो पुत्रो में से एक–एक को आशीष दी और अपनी लाठी के सिर पर सहारा लेकर दण्डवत् किया। इब्रानियों 11:22 विश्वास ही से यूसुफ ने जब वह मरने पर था, तो इस्त्राएल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी। इब्रानियों 11:23 विश्वास ही से मूसा के माता–पिता ने उसको, उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा क्योकि उन्होने देखा कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे। अब और क्या कहूँ? क्योकि समय नही रहा कि गिदोन का, और बाराक और शिमशोन का और यिफतह का और दाऊद और शमूएल का और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूं। इब्रानियों 11:33 इन्होने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते, धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त की, सिंहो के मुँह बन्द किए। इब्रानियों 11:34 आग की ज्वाला को ठण्डा किया; तलवार की धार से बच निकले; निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजो को मार भगाया। कई एक ठट्ठो में उड़ाए जाने और कोड़े खाने वरन् बांधे जाने और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए। इब्रानियों 11:37 पथराव किए गए, ओर से चीरे गए; उनकी परीक्षा की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में, और क्लेश में, और दुःख भोगते हुए भेड़ो और बकरियों की खाले ओढ़े हुए इधर–उधर मारे–मारे फिरे। इब्रानियों 11:38 और जंगलो और पहाड़ो और गुफाओ और पृथ्वी की दरारो में भटकते फिरे। संसार उनके योग्य न था। इब्रानियों 11:39 विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई तौभी उन्हे प्रतिज्ञा की गई वस्तु न मिली। परमेश्वर आशा करता है कि उस पर विश्वास करने वाले लोग एक अलग लोग (प्रजा) हो और इस पृथ्वी पर परदेशी के समान हो! अब्राहम एक विश्वास वाला व्यक्ति था। वह उस प्रकाशन से ही संतुष्ट हो गया कि केवल परमेश्वर ही उसके लिए मायने रखता है। उसने परमेश्वर की उपस्थिति में परमेश्वर के महान उद्देश्य के लिए जीना

सिखा। उसने परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपना घर छोड़कर एक परदेशी, अजनबी और तीर्थयात्री के समान जीना सिखा। परमेश्वर के लिए जीने के खातिर वह अकेला ही खड़ा रहा। वह परमेश्वर से निज़ी तौर पर मिला और उसकी आवाज़ को भी सुना। परमेश्वर ने उसके भविष्य के लिए उसे निश्चित किया यद्यपि वह नही जानता था कि वह कहां जा रहा था। इब्रानियों 11:9 कहता है, "विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में, पराए देश में परदेशी के समान रहकर इसहाक और याकूब समेत जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओ में वास किया"। ये सब हमारे पूर्वज है जिन्होने अपने जीवनों को अनन्त निवास (घर) पर ध्यान केन्द्रित करते हुए जिया (इब्रानियों 11:16–17) वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी है और परमेश्वर ने उनके लिए एक नगर तैयार किया है। उनमें से कईयों ने यीशु को उसकी महिमा के साथ देखा, कुछ लोगो का परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत (सामना) मुलाकात हुई। मूसा को पहाड़ को (चोटी) शिखर पर, याकूब को स्वप्न में एक सीढ़ी द्वारा जो स्वर्ग तक जाती थी। पतरस, यूहन्ना और याकूब को पहाड़ पर रूपान्तरण द्वारा (मत्ती 17:1–9)। बहुत से यीशु के साथ चले, जैसा कि यूहन्ना अपने सुसमाचार में लिखता है, " और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया और हमें उसकी महिमा देखी"। नया नियम के इन पुरूषो (व्यक्तियों) को व्यक्तिगत तौर पर सिखाया गया, तैयार किया गया ताकि वे दीनता के साथ सेवा करे, क्षमा करे, सुसमाचार को फैलाने के लिए उन्हे सामर्थ प्रदान की गई और उन्होने अपने स्वामी (गुरू) से सब कुछ सुना और सिखा था। मैं इसमें पौलुस को भी सम्मिलित करता हूं तथा दमिश्क के मार्ग पर जो उसकी यीशु से मुलाकात हुई (प्रेरितो 9)। उनमें से बहुत से पुनरूत्थानित यीशु को देखा और जीवन का अनुभव किया जिसने उनकी बुलाहट को और भी मजबूत किया कि वे सुसमाचार को सभी लोगो तक लेकर जाए। इन कुछ (चंद) लोगो ने ही सारी दुनिया को उलट–पुलट कर दिया। जब उन्होने अपने अंदर वास करने वाले पवित्र आत्मा की सामर्थ के अधीन अपने आपको कर दिया। बहुत सारी बाधाओं का सामना करने के बावजूद, वे बड़े सतावों के मध्य में भी विजयी हुए यहां तक कि अपनी शहीदी द्वारा भी उन्होने अपने उद्देश्यो और कार्यो को पूरा किया। जैसा कि हम वचनों में स्पष्ट रूप से देख सकते है कि हमारी सीमाएं (कमियाँ) परमेश्वर के लिए बाधाएँ नही है। परमेश्वर ने मूसा और शमूएल के मुँह के द्वारा बाते करी। परमेश्वर ने उस दाऊद का इस्तेमाल पलिश्तिनियों को हराने तथा इस्त्राएल का राजा होने के लिए किया, जो अपने खुद के परिवार में सबसे छोटा था तथा तुच्छ जाना जाता था। उसने पतरस को इस्तेमाल किया जो कि चंचल तथा अविश्वासयोग्य था, कि वह प्रारंभिक कलीसिया के प्रेरितो की अगुवाई करने वाला हो जाए। संदेह करने वाला थोमा यीशु को देखकर बदल (परिवर्तित) गया। इतिहास बताता है कि वह बहुत दूर भारत देश में आया। इन लोगो (पुरूषो) के अलग व्यक्तित्व, परंपराए तथा अनुभव थे, तौभी उनमें से हर एक अपनी बुलाहट के लिए परमेश्वर के सामने जबावदेह था। परमेश्वर ने जगत के मूर्खो को चुन लिया है कि बलवानो को लज्जित करे और परमेश्वर ने जगत के निर्बलो को चुन लिया है कि बलवानो को लज्जित करें।

परमेश्वर ने जगत के नीचो और तुच्छो को चुन लिया है। परमेश्वर लोगो और परिस्थितियों को, कमजोर और साधारण को चुनता है ताकि हम यह जान ले कि केवल परमेश्वर ही जीवन और संसार को बदल सकता है तथा वह व्यक्तिगतो को सामर्थ्य भी देता है। उसके मार्ग हमारी समझ से भी ज्यादा परे है। और वे परमेश्वर के उद्देश्यो को पूर्ण करते है जो वह उनकी पीढ़ियो के करना चाहता है। परमेश्वर की बुद्धि की यह कितनी अद्भूत गवाही है। साधारण मनुष्य परमेश्वर के साथ असाधारण जीवन जीते है। मै प्रार्थना करता हूँ कि यह अध्ययन आपकी आँखो को खोलेगा ताकि जो सामर्थ आपके अंदर है आप उसे देख सको। हम भी, उनके समान ही परमेश्वर की महिमा के यंत्र (माध्यम) हो सकते है, जब हम उसमें चले और उस उद्देश्य के साथ जीएं जिसके लिए उसने हमें बुलाया है।

बाईबिल के महापुरूष

अब्राहम

अवलोकन (समीक्षा)
पंद्याश– उत्पत्ति 11–22

मुख्य आयत– गलातियों 3:29 "और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो"।

सिद्धांत– परमेश्वर का अनुकरण करने वालो के पास एक बुलाहट होती है कि वे कुछ छोड़े और एक वायदे (वाचा) से लिपटे रहे, और परमेश्वर के पास उनकी पहुंच होती है।

परीक्षाएँ
पुराना नियम में अब्राहम के जीवन से बढ़कर और कोई नही है जिसने एक बहुत गहरी छाप छोड़ी हो और उसके बाद सबसे प्रमुख स्थान पाया हो। यहूदी राष्ट्र के संस्थापक के रूप में उसका पद तथा कई सदियो से विश्वासियों के लिए उसका चरित्र एक उदाहरण के रूप में है, जिसके कारण उसे पवित्रशास्त्र में एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। परमेश्वर अब्राहम को बुलाने से आरंभ करता– इब्रियों (इस्त्राएलियों) को अपनी विशेष प्रजा बनाता है ताकि वे सभी जातियों के लिए उसका प्रकाशन बन जाए। उन्हे अपने आसपास के देशो (जातियों) से, मूर्तिपूजा तथा भ्रष्टाचार से अलग होकर स्वयं परमेश्वर के अद्‌भूत लोग बनना था। परमेश्वर ने अपने प्रकाशन की वाणी (वचन)– बाईबिल को उन्हे दिया जो कि मसीह के आगमन तथा उन लोगो के उद्धार के लिए उसकी योजना को बताती थी। एक परमेश्वर पर विश्वास करने वाले देशो (जातियों) के लिए वे एक उदाहरण थे, वो परमेश्वर जो सारी सृष्टि का बनानेवाला है (प्रेरितो 14:16–1, 17:30)

क्या जीवन है! मेसोपोटामिया को छोड़कर कनान जाने की एक बुलाहट के साथ शुरू हुआ। पूर्व उत्तर में एक आरामदायक जीवन अचानक से खत्म हो जाता है जब परमेश्वर यह निर्णय करता है कि उसकी (अब्राहम) जरूरत अब कही ओर है। पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ अब्राहम ने अपने परिवार और अपनी धन सम्पदा को लिया और वायदे के देश की ओर निकल पड़ा। नया जीवन, नई संस्कृति और नया पर्यावरण का एक देश। परमेश्वर की बुलाहट की आज्ञा मानने के लिए अपने प्रियजनो से अलग होना, अब्राहम की आज्ञाकारिता का सबसे कठिन भाग था।

जब परमेश्वर एक व्यक्ति को सुधारने या बदलाव करने के लिए बुलाता है तो उसे उसका जरूर पालन करना चाहिए। अब्राहम ने विश्वास की रोमांचक यात्रा को एक अनजान जगह के लिए परमेश्वर के साथ शुरू किया। उसे अपने पूरे जीवन को फिर से व्यवस्थित करना था। उसने बाकी सभी देवताओ (ईश्वरो) से बढ़कर परमेश्वर यहोवा के मार्गदर्शन में चलने को चुना। परमेश्वर कभी भी उस भीतरी सामर्थ के बिना, जो उसे वायदा किया है कि वह देगा ऐसा कोई निर्देश नही देता है। वह इच्छा और सामर्थ दोनो देगा ताकि उसके मकसद में वह निरंतर बना रहे। (फिलिप्पियो 2:13)

यह यात्रा हर एक उस व्यक्ति के लिए है, जो परमेश्वर का अनुकरण करता है या उसके पीछे चलता है। कनान देश हमारे लिए आत्मा से भरे हुए जीवन की एक तस्वीर है। यह केवल कुछ सौभाग्यशाली, या महान् या पंसदीदा लोगो के लिए नही है। यह वो जगह है, जहां परमेश्वर चाहता है कि हम सब रहे। उसकी उपस्थिति में।

जब एक अकाल द्वारा जो उस देश में आया था, अब्राहम की परीक्षा हुई तो अब्राहम ने उस परिस्थिति से दूर भाग जाने का चुनाव किया। यहां पर हम अब्राहम को परमेश्वर से दिशा–निर्देश पूछते हुए नही देखते (नीतिवचन 3:5–6)। हम अब्राहम के अंदर एक भय को देखते है, जो कि उसके अंदर स्वयं अपने तथा अपनी पत्नी के लिए था और फिर हम देखते है कि उस दर्द से छुटकारा पाने के लिए अब्राहम को झूठ बोलना पड़ता है। मिस्त्र में जीवन बिताने का मूल्य बड़ा ही दर्दनाक और भयवाला था। उसके तथा उसके परिवार और फिरौन के ऊपर आयी मुसीबत (महमारी) के लिए उसने एक बड़ी कीमत चुकाई। आशीष होने के लिए उसकी बुलाहट एक श्राप बन गई। उसको डांटा गया तथा अपमानित किया गया। अब्राहम कहां पर वापस आया? तम्बू और वेदी के पास और उस परमेश्वर यहोवा के पास जो सारे अकाल और परीक्षाओ और परिस्थितियों के बावजूद भी उसकी सभी आवश्यकताओ को पूरा कर सकता था।

उसी समय पर, वह अपने भतीजे लूत के साथ अगले संघर्ष को करने के लिए तैयार था। उत्पत्ति 15 में, वह भूमि/देश उन, दोनो के लिए पर्याप्त नही था, इसलिए शांति बनाए रखने के लिए अब्राहम ने लूत को एक देश (भूमि) चुनने के लिए कहा। अलगाव जरूर कठिन रहा होगा परन्तु अब्राहम ने शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए संघर्ष में अपने अधिकारो को छोड़ दिया तथा व्यक्तिगत हानि उठाने को भी तैयार हो गया। उसने लूत को सबसे उत्तम जगह चुनने का सौभाग्य दिया जो कि उसके (लूत) तथा उसके परिवार के लिए उत्तम साबित नही हुआ क्योकि अब वह एक पाप से ग्रसित क्षेत्र के और भी करीब आ गया। उसने अपने तम्बू को सदोम के नगरो के पास लगाया (13:12)। अध्याय 14 में लूत को शत्रुओ द्वारा बंधी बनाकर ले जाया जा रहा था तथा अब्राहम ने उसका जीवन बचाया, यह बात उसके लिए एक चेतावनी होती चाहिए थी। वह किसी

को भी प्रभावित करने में असमर्थ था तथा उसने अपने जीवन को व्यर्थता में गवांया तथा उसके चुनाव के कारण उसकी पीढ़ियो में अनैतिकता भी आ गई। उसने अपनी सम्पदा; अपने सब पशुओ (धन) को, अपनी पत्नी, परिवार सबको खो दिया और परमेश्वर के उस दल से वह हमेशा के लिए कट गया जिसे उसने अपने मकसद को इस दुनिया में पूरा करने के लिए चुना था। हमारे चुनाव बहुत से जीवनो को प्रभावित करते है।

परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया कि उसके वंशज तारो के समान होंगे (उत्पत्ति 15)। परन्तु जैसे–जैसे अब्राहम और सारा संतान उत्पन्न करने के वर्षो से आगे बढ़ते गए तो उन्होने खुद से परमेश्वर के वायदे को पूरा करने की सोची। इसके परिणामस्वरूप इश्माएल हुआ जो कि उसके लिए तथा उसके वंशजो के लिए भी बहुत दुःख और उलझनो को लाने वाला बन गया। अंततः अब्राहम ने विश्वास किया कि परमेश्वर उसके लिए एक चमत्कार करेगा यद्यपि वह नही जानता था कि यह कैसे होगा। जब परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया कि उसके वंश (संतान) के द्वारा पृथ्वी की सभी जातियाँ आशीष पाएंगी तो उसके मन में यही था कि इसहाक के वंशजो के द्वारा ही प्रभु यीशु मसीह आएंगे जो कि चमत्कारिक रूप से कुंवारी के द्वारा पैदा होगा। एक और चमत्कारी जन्म जिसे कि पूरा होना था।

शायद इसी विश्वास के कदम में उसे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उस समय थामे रखा जब परमेश्वर ने उसे अपने इकलौते पुत्र को बलिदान करने को कहा, जिससे वह बहुत प्रेम करता था तथा जिसके द्वारा ही सारे वायदे पूरे होने थे। अब्राहम को समर्पण, अलगाव, एक आशीष होने के लिए बुलाया गया था। अपने सबसे प्रिय पुत्र (चीज़) को मसीह की आज्ञा मानते हुए बलिदान करना ही हमारे लिए एक ऐसा उदाहरण है, जिसका हमें अनुकरण करना चाहिए। केवल परमेश्वर की सामर्थ ही से जो हमारे अंदर है, जब हम उसकी सामर्थ में होकर चलेंगे तभी हम दूसरो के लिए वो आशीष बन सकेंगे जो परमेश्वर हमसे चाहता है।

उत्पत्ति में अब्राहम एक मुख्य केन्द्रित व्यक्ति बन गया। वह इब्रानी देश (इस्त्राएल) का पिता है। वह मसीह का पूर्वज भी है, जिसकी पीढ़ी में से मरियम थी, जिसके द्वारा मसीह का जन्म हुआ। परमेश्वर के वायदे के वचन का अब्राहम मार्ग–निर्माता है। यहोवा ने 'इसे उसकी धार्मिकता में गिना' (उत्पत्ति 15:6)। परमेश्वर के ऊपर उसकी निर्भरता हमारे लिए अभ्यासिक उदाहरणो से भरी हुई है। वह संदेह और असफलता वाला एक मनुष्य ही था। कोई भी व्यक्ति जो शायद अपने परिवार या गांव में से परमेश्वर पर भरोसा करने वाला और उसकी आज्ञा मानने वाला है, उसके लिए अब्राहम की जीवन एक चुनौती और उदाहरण है।

अब्राहम ने परमेश्वर के साथ सहभागिता को अनुभव किया तथा उसे परमेश्वर का मित्र कहा गया (18:17–19 और यशायाह 41:8)। परमेश्वर ने उसके मन की इच्छा को पूरा किया (उत्पत्ति 21)। उसके पास एक उद्देश्यपूर्ण और सफल जीवन था जो उसकी खुद की पीढ़ी द्वारा तथा उसका अनुकरण करने वालो के द्वारा सम्पूर्ण अनंतता में पहुंचा स्वयं हम भी परमेश्वर को अपनी ढाल तथा महान प्रतिफल होने के लिए अनुमति दे सकते है (15:1)। विश्वास के इस उदाहरण को दूसरो तक पहुंचाकर तथा दूसरो के लिए एक आशीष होने का संतुष्ट जीवन हम जी सकते है।

अब्राहम की बुलाहट अध्याय 1

वचन – उत्पत्ति 11 और 12

मुख्य आयत – उत्पत्ति 12:3–4 जो तुझे आशीर्वाद दे, उन्हे मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।

पहला दिन

उत्पत्ति 11:27–32 पढ़े

अब्राहम का पिता कौन है?

अब्राहम के भाईयो के क्या नाम है?

अब्राहम की पत्नी का क्या नाम है तथा यहां पर उसके बारे मे क्या बताया गया है?

वे वहां जा रहे थे और कहां तक पहुंचे थे?

दूसरा दिन

उत्पत्ति अध्याय 12 पढ़े

1. परमेश्वर की बुलाहट के उत्तर में अब्राहम ने क्या छोड़ा?
2. प्रत्येक पद्यांश को देखो तथा परमेश्वर की बुलाहट के प्रभाव के विषय में लिखो जो हर एक उस व्यक्ति के ऊपर पड़ता है, जो स्वंय को परमेश्वर के सामने समर्पण कर देता है।
   मत्ती 4:18–12
   मत्ती 8:22
   मरकुस 8:34–36
   लूका 14:26–33
   1 पतरस 2:9; 1यूहन्ना 2:15–17
3. उत्पत्ति 12:2–3 में परमेश्वर की अब्राहम के लिए बुलाहट में कौन–कौन से वायदे है जो हमें उत्साहित करते है?
4. गलातियों 3:8–9, आज हमारे ऊपर कैसे लागू होता है?

तीसरा दिन

उत्पत्ति अध्याय 12 पढ़े

1. जब अब्राहम हारान से निकला तो वह कितने वर्ष का था?
   उत्पत्ति 25:7–8 से इसकी तुलना करे, क्या वह जवान, मध्यम आयु या बूढ़ा था?
2. अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा क्यो मानी (इब्रानियो 11:1–3; 8–10) क्या आप ऐसा ही कोई हाल का अनुभव बता सकते है?

जब हम आज्ञा मानते है तो हमें कौनसा वायदा मिलता है (रोमियो 10:11)?

3. कौनसा वाक्यांश या आयत यह दिखाती है कि जो कुछ भी अब्राहम के पास था उसने सबकुछ इस अज्ञाकारिता के कदम में डाल दिया (उत्पत्ति 12:1–9)?
4. उसके साथ कौन गया?
5. जब अब्राहम कनान देश पहुंचा तो उसे परमेश्वर ने कौनसा वायदा दिया?
6. अब्राहम ने इसका प्रत्युत्तर कैसे दिया?
7. यदि आपने भी अब्राहम के समान आज्ञाकारिता से मसीह का अनुकरण किया है तो आप अपने अनुभव को हमारे साथ बांट सकते है?

चौथा दिन

उत्पत्ति 12:9 और निम्नलिखित वचनो को पढ़े

1. 12:9 में अब्राहम ने क्या कदम उठाया?
2. अनुयायियो के रूप में हम भी कैसे आगे बढ़ते है?
   a. कुलुस्सियों 1:23
   b. कुलुस्सियों 2:6–7
   c. इब्रानियों 6:1
   d. 1 पतरस 2:2

पाँचवा दिन

उत्पत्ति 12:10–20 पढ़े

1. जब अकाल पड़ा तो आप क्या सोचते है कि क्या अब्राहम ने परमेश्वर के मार्गदर्शन को खोजा या फिर वह अपनी बुद्धि के द्वारा ही कार्य कर रहा था?
2. अब्राहम के डर (भय) को हम किस आयत में देखते है?
   अब्राहम का पाप?
   अब्राहम का पाप जिसने दूसरो को भी प्रभावित किया?
   अब्राहम पर परमेश्वर की दया?
3. उत्पत्ति 13:1–4 में, अब्राहम परमेश्वर के पास वापस कहां पर आया?
4. क्या हमारे अनुकरण करने के लिए आप इसमें से एक आत्मिक (सबक) पाठ को ढूँढ सकते है?

बाकी बाईबिल का भाग अब्राहम की शरिरिक और आत्मिक संतानो के विषय में है।
परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा (लोगो) के जीवनो के द्वारा परमेश्वर की योजना।

अब्राहम की प्रार्थना अध्याय 2

वचन – उत्पत्ति अध्याय 18
मुख्य वचन – उत्पत्ति 18:14, "क्या यहोवा के लिए कोई काम कठिन है"?

पहला दिनः उत्पत्ति 18:1–10 पढ़े
1. अब्राहम के सामने कौन प्रगट हुआ? उन्होने किसके लिए पूछा (आयत 9)?
2. परमेश्वर का दूत सारा के लिए क्या संदेश लाया था?
3. सारा के हंसने के बाद, वह कैसे जान गई कि यह तो यहोवा है?
4. यूहन्ना 1:46–52 में नतनएल कैसे जान गया कि वह प्रभु से बात कर रहा है?
5. सारा को क्या विश्वास करने की जरूरत थी? (लूका 1:45) क्या यह आज भी सत्य है?
6. इब्रानियो 11:6 और 11:11 विश्वास के विषय में क्या कहता है?

दूसरा दिन उत्पत्ति 18:11–18 पढ़े
1. परमेश्वर ने अब्राहम से सदोम के बारे में क्यो बताया?
2. यूहन्ना 15:12–17 में यीशु ने अपने कार्यो का वर्णन अपने लोगो से कैसे किया?

तीसरा उत्पत्ति 18:20–23 पढ़े
1. परमेश्वर यहोवा ने सदोम को क्यो दण्ड दिया?
2. अब्राहम परमेश्वर के सामने किन सवालो को लेकर आया?
3. क्या परमेश्वर से प्रश्न करना सही है?
4. कौनसी आयत दिखाती है कि परमेश्वर से प्रश्न करते समय अब्राहम दीन था?
5. आप परमेश्वर की दया को और अब्राहम में बदलाव को कैसे देखते हो?

चौथा दिनः उत्पत्ति 19:1–14 पढ़े
1. उत्पत्ति 13:12–13 में लूत ने अपना तम्बू कहाँ लगा लिया था?
2. सदोम के लोगो का वर्णन करे?
3. उत्पत्ति 14:12 में लूत कहां गया था? (यह अब्राहम द्वारा अपने भतीजे को पहले बचाये जाने की घटना है)
4. उत्पत्ति 19:1 क्या बताता है कि लूत कहाँ रहता था? (नगर का फाटक वह स्थान होता था जहां पर नगर के अगुवे मिलते थे)।
5. क्या इन अधर्मी लोगो पर लूत का कोई प्रभाव था?
6. हमारे तथा हमारे परिवार के लिए हम क्या चेतावनी को इसमें से सीख सकते है?

पाँचवा दिनः उत्पत्ति 19:15–38 पढ़े

1. इस दुखान्त घटना से बचने के लिए लूत क्या कर सकता था?
2. लूत द्वारा सदोम में रहने के लिए चुनने के कारण लूत तथा उसके परिवार ने क्या खोया?
3. परमेश्वर ने लूत पर कैसे दया दिखाई?
4. क्या परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है?
5. रोमियो 8:26–27 में हमें प्रार्थना करने में कौन मदद करता है?

प्रभु सब कुछ जानता है और उचित रीति से न्याय करता है।

अब्राहम का बलिदानः अध्याय 3

वचन– उत्पत्ति अध्याय 22

मुख्य वचन– रोमियों 12:1 इसलिए हे भाईयो, में तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं कि अपने शरीरो को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

पहला दिन– उत्पत्ति 22:1–10 पढ़े

1. परमेश्वर सभी मनुष्यो के हृदय को जानता है। अब्राहम की परीक्षा लेने के पीछे परमेश्वर का क्या उद्देश्य था, आप क्या सोचते है?
2. आयत 2 के किस वाक्यांश से यह प्रगट होता है कि परमेश्वर अपने पुत्र के लिए अब्राहम के प्रेम को जानते थे?
3. कौनसी कठिन बात या चीज़ शायद परमेश्वर आपसे मांग सकते है?

दूसरा दिनः उत्पत्ति 22:5 – इब्रानियों 11:17–19 पढ़े

1. अब्राहम ने अपने दासों से क्या कहा कि वह पर्वत पर जाकर करेगा?
2. इब्रानियों की पत्री से बताए कि अब्राहम ने क्या विश्वास किया?
3. 1 शमूएल 15:22 के अनुसार परमेश्वर किस प्रकार के बलिदान से प्रसन्न होता है?
4. दो हज़ार वर्ष बाद इसी मोरिय्याह पर्वत की जगह पर कौनसा बलिदान किया गया था? (1यूहन्ना 4:9–10; यूहन्ना 19:17–18)

यहूदी विश्वास करते है कि वेदी, सुलैमान का मन्दिर, गुलगत्ता अर्थात् खोपड़ियो की जगह, ये सब इसी पर्वत पर स्थित है।

तीसरा दिनः उत्पत्ति 22:9–19

1. अब्राहम को उसके पुत्र इसहाक को मारने से किसने रोका?
2. परमेश्वर के स्वर्गदूत द्वारा दिए गए दूसरे संदेश में कौनसा एक और वायदा अब्राहम के लिए जोड़ा गया?
3. क्या आप उत्पत्ति 22: 1–9 और इब्रानियो 11:17–22 में बीच में समानताएँ देखते है?
4. यीशु आपके लिए एक (प्रतिस्थापन) स्थापन्न कैसे हो गया?

चौथा दिनः रोमियों 12:1–2 पढ़े

1. उदाहरण देकर समझाए कि मसीहियों को किस प्रकार से एक जीवित बलिदान बनना चाहिए?

2. आज आप किन तरीको से अपने आपको परमेश्वर को देने के लिए चुनाव कर सकते हो?

पाँचवा दिनः उत्पत्ति 23:1–20

1. क्या कारण था जिसके लिए अब्राहम भूमि खरीदना चाहता था?
2. यह भूमि कहां थी?
3. इब्रानियों 11:13–16 से, अब्राहम ने इस पृथ्वी पर कैसा जीवन जिया?
4. क्या आप अपने स्वर्गीय घर का (इच्छा) अभिलाषा करते हुए जीते हो?

जब भी 'प्रभु/यहोवा (LORD)' शब्द का इस्तेमाल बढ़े अक्षरो में किया जाता है तो यह त्रिएक परमेश्वर के दूसरे व्यक्ति 'यीशु' को दर्शाता है।

बाईबिल के महापुरूष

इसहाक

अवलोकन (समीक्षा)

उत्पत्ति 25:1–10 में अब्राहम की मृत्यु का लेखा है जिसके तुरंत बाद ही यह कथन आता है कि "परमेश्वर ने उसके पुत्र इसहाक को आशीष दी"। इसहाक अब्राहम को वायदा किया हुआ वारिस या उत्तराधिकारी था, परन्तु साथ ही वह परमेश्वर से विशेष आशीष को पाने वाला भी था। जो वायदे अब्राहम से किए गए थे वे अब इसहाक को मिल गए, इस प्रकार से वायदे की संतान की कहानी जारी रही।

यद्यपि परमेश्वर की बड़ी योजनाएँ इस्त्राएल देश के ऊपर केन्द्रित थी। हमारा परमेश्वर अपनी भलाई और अनुग्रह को सभी लोगो और देशो के ऊपर दिखाने से कभी नही चूकता है। इस तथ्य के बावजूद भी कि इश्माएल विश्वास से नही बल्कि शरीर से उत्पन्न हुआ था, तौभी परमेश्वर ने हाज़िरा के पुत्र इश्माएल से भी एक वायदा किया। उसने वायदा किया कि इश्माएल में से भी एक बड़ी जाति (राष्ट्र) निकलेगा तथा परमेश्वर हमेशा अपने वायदे को याद रखता और पूरा करता है। असीरिया वासी तथा अरबी लोग हमें इश्माएल के वंशज होने की जानकारी देते है। उसके गोत्र ने एदोम नामक स्थान पर यीशु के आने से दो शतब्दियो पहले तक वास किया तथा यमन और सीरिया के बीच में एक केन्द्रित तथा महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग की स्थापना करी।

वायदे की मुख्य वंशावली पर वापस आते हुए, हम इन दो पूर्वजो के समान विश्वास के जीवन की विस्तृव कहानी को देख सकते है। उसके पिता अब्राहम के समान ही इसहाक का जीवन भी एक यात्री के समान ही था। यद्यपि उसके प्रारंभिक जीवन के विषय में बहुत थोड़ी हो जानकारी मिलती है। हम जानते है कि जब उसका जन्म हुआ तो उसके पिता 100 वर्ष के थे और उसकी माता 90 वर्ष की थी। हम जानते है इसहाक का जन्म और आरंभिक जीवन बेर्शेबा में बीता (उत्पत्ति 21:33–35)। बेर्शेबा हेब्रोन से केवल 20 मील दूर दक्षिण में स्थित है। इस स्थान को 'वाचा/शपथ का कुंआ' भी कहा जाता है क्योकि यहां पर अब्राहम के लिए परमेश्वर का प्रकाशन भी आया था (उत्पत्ति 26:24–33)। उसके जन्म के कुछ समय बाद ही उसका व्यक्तित्व निखरने लगा। वह एक अनुकरण करने वाला था, वह अगुवा नही था। तौभी उसका जीवन बहुत से पाठो (सबक) से भरा हुआ था। जैसे कि शुरूआत में उसके आधे भाई (सौतेले भाई) इश्माएल ने उसे सताया (गलातियों 4:29)। परन्तु परमेश्वर ने उसके भीतर एक स्थिर, दृढ़ और व्यक्तिगत

विश्वास को विकसित किया। उसने केवल एक ही पत्नी से प्रेम किया। वह जानता था कि कैसे प्रार्थना करके उसका उत्तर पाया जा सकता है (25:21)। परमेश्वर के वचन की आज्ञा को मानते हुए ही उसकी आशीष को अनुभव किया जा सकता है।

इसहाक के घूमन्तु (भटकने) वाले जीवन के दौरान बहुत सारी कठिनाईयाँ भी आई। सबसे पहली कठिनाई मोरिय्याह पर्वत पर आई जो कि यरूशलेम के चारो की पहाड़ी श्रृंखला है। इस विशेष घटना ने इसहाक के चरित्र को भी दर्शाया। अब्राहम और उसके छोटे पुत्र के लिए बेर्शेबा से इस पर्वत तक के बीच में 40 मील की यात्रा थी। और निश्चय ही यह दोनो के लिए काफी कठिन यात्रा भी थी क्योकि अब्राहम को आज्ञा मिली थी कि वह अपने वायदे के पुत्र को इस पर्वत पर लाकर परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाएं। परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के कारण अब्राहम ने अपने पुत्र को बांधकर वेदी पर रख दिया। इसहाक के अंदर भी अपने पिता के प्रति कितना भरोसा था तथा उसने चुपचाप अपने आपको परमेश्वर की इच्छा के लिए सौंप दिया। सचमुच, उसके हृदय की गहरी शांति और विश्राम ही उसके बाकी जीवन को दर्शाती है, जिसके परिणामस्वरूप ही उसने परमेश्वर की करूणाओं को देखा। क्या यह उस विश्राम के विषय में नही है, जिसके बारे में मत्ती 11:24–30 में बताया गया है? सचमुच, परमेश्वर का जुआ हल्का और सहज है, जब हम उसे अपने साथ और अपने आगे चलने की अनुमति देते है।

इसहाक की समर्पण का आत्मा को फिर से उस समय देखा जा सकता है, जब उसके लिए एक पत्नी चुनने का समय आया। वह परमेश्वर के कोमल प्रेम को पहले से जानता था और इसलिए वह पूरी रीति से परमेश्वर पर भरोसा करता था कि वह उसे उत्तम जीवन साथी देगा। उत्पत्ति 24:62–63 में हम इसहाक को लहैरोई नामक कुएँ के पास पाते है, यह वही रेगिस्तान का कुंआँ या जहा परमेश्वर ने हाजिरा को दर्शन दिया था। वह परमेश्वर के वचन पर मनन कर रहा था और प्रार्थना कर रहा था (भजन 119:15, 143:5)। परमेश्वर ने उसके मन की इच्छा को पूरा किया जब वह सेवक वापस आया और चुनी हुई, जवान और सुन्दर रिबका को साथ लाया। इसहाक रिबका से बहुत प्रेम करता था जो कि उसकी इकलौती पत्नी थी। अब्राहम के समान ही रिबका ने भी अपने विश्वास को साबित किया जब उसने परमेश्वर के लोगो के साथ रहने के लिए अपने परिवार को छोड़ा। होने पाएं कि आप धीरज के साथ प्रभु का इंतजार करे कि वह आपके मन की इच्छाओं को पहले आपके अंदर डाले और फिर उन इच्छाओं को पूरा करे। (भजन संहिता 37:4)

अपने पिता अब्राहम के समान ही, इसहाक को जल्द पता चल गया कि उसकी पत्नी बांझ है (उत्पत्ति 25:1)। अपने माता–पिता के अनुभव से वह इस बात को पहचान गया कि यह केवल यहोवा ही है जो गर्भ को खोलता या बन्द करता है। इसलिए इसहाक ने अपनी प्रिय पत्नी

रिबका के लिए प्रार्थना करी। परन्तु अपने पिता के समान ही उसे भी करीब 20 वर्षो तक इंतजार करना पड़ा (उत्पत्ति 25:28) तौभी, इसहाक ने अपने माता–पिता के समान कोई अधर्मी उदाहरण का अनुकरण नही किया और न इस विषय को अपने हाथो में रखा। उसने धैर्यपूर्वक परमेश्वर के समय का इंतजार किया और जो उन्होने मांगा उसके दुगुना परमेश्वर ने उन्हे दिया। रिबका को जुड़वा बच्चे हुए जो दो जातियों को जन्म देंगे, पहला–दूसरे से ज्यादा सामर्थी होगा और बड़ा वाला छोटे की सेवा करेगा। याकूब के जन्म के समय, वह अपने भाई एसाव की एड़ी पकड़े हुए था, जो कि एक भविष्यवाणी का चिह्न था कि आने वाले समय में भाईयों के बीच में संघर्ष और प्रतिस्पर्धा रहेगी। यही बात इसहाक और रिबका के ऊपर भी आ गई। उन्होने घटनाओं को बदलने की कोशिश करी ताकि वे अपने प्रिय पुत्र को आशीष दिलवा सके, इन सब बातो के कारण परिवार में भी काफी संघर्ष और तनाव आ गया।

कई वर्षो बाद जब अकाल पड़ा तो इसहाक भी अपने पिता के समान ही मिस्त्र को जाने के लिए निकला। और जब वह गरार नामक नगर में पहुंचा तथा यहोवा परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया और आज्ञा दी कि वह वही रूके और उस पर भरोसा करे और मिस्त्र में न जाएँ। मिस्त्र नही बल्कि कनान वह देश था जो परमेश्वर ने इसहाक के लिए नियुक्त किया था। यहोवा का यह व्यक्तिगत प्रगटीकरण और इसहाक के साथ वाचा, अब्राहम के साथ बांधी गई वाचा की ही एक निरंतरता थी परन्तु उसमें कुछ और भी पहलू थे जो केवल विशेषरूप से इसहाक के लिए थे। वायदे के विस्तार में सहायता, सुरक्षा और सहभागिता भी शामिल करी गई। इसहाक को प्रेम किया गया, न केवल उसके लिए बल्कि उसके पिता के लिए भी (26:5) उसने परमेश्वर जो है उसके महान प्रकाशन को भी पाया। क्या आपकी संतानों के लिए भी ऐसी मीरास (विरासत) होगी?

दुर्भाग्यवश, इसहाक ने भी अपने पिता के भय के पाप को गरार में दोहराया। परिस्थितियाँ समान ही थी, सारा के समान रिबका भी सुंदर थी इसलिए इसहाक ने गरार के लोगो से कहा कि वह उसकी बहन है। परमेश्वर ने इसके मध्य में कार्य किया और रिबका और इसहाक दोनो की रक्षा करी। इसहाक का झूठ सबको पता लग गया और उसने इस भय को स्वीकार भी करा। परन्तु परमेश्वर रिबका और इसहाक के प्रति दयालु था तथा वह अपने वायदे पर सच्चा बना रहा। उसने उनकी रक्षा करी तथा उस देश में फलवन्त किया। अकसर कितनी बार ऐसा ही पाप हम अपने परिवारों में देखते है? क्या हम अपने परिवारो के पापों को पहचान कर, उन्हे रोक कर और उनका अंगीकार कर सकते है? आप परमेश्वर से मदद मांगे कि वह इस विषय के बारे में आपको समझ और ज्ञान दे।

जब वह गरार में था, तो परमेश्वर ने इसहाक की उपज को आशीष दी परन्तु कुंओ को खोदने में होनेवाली परेशानियों की अनुमति दी। ऐसा ही व्यवहार या सताव उसने अपने भाई इश्माएल से प्राप्त किया था क्योकि वह आशीष की संतान होने के कारण सताया गया। क्या आप कभी किसी के द्वारा या किसी चीज़ के कारण पीड़ा सहते है जो आपको उन जीवन के झरनों को पाने से रोकते है जो परमेश्वर आपको देना चाहता है। शायद शत्रु ने उस भलाई को रोका होगा या चुरा लिया होगा जो परमेश्वर ने आपको दी थी, परन्तु यीशु जीवित जल का बहता हुआ झरना और कुंआ है जिसे कोई भी ढांप नही सकता है। उत्साहित हो जाए क्योकि वह आपको अंदर से तरोताज़ा करना चाहता है तथा आपके जीवन के द्वारा दूसरो के जीवन में वह जल बहाना चाहता है, यहां तक कि उनके लिए भी जो आपको रोकते है या आपका विरोध करते है। (यूहन्ना 7:37)

उत्पत्ति 25:28 में हम इसहाक में एक कमज़ोरी को देखते है, जो कि उसके बाद के जीवन में एक बड़ी परेशानी (मुद्दा) बन गई। उसने एसाव के शिकार करने की योग्यता के कारण उसे पंसद किया या फिर यह शायद, एसाव का जंगली आत्मविश्वास था जो कि मृदुल स्वभाव वाले इसहाक का आकर्षित करता था। इन सबके बावजूद, एसाव से ऐसे बहुत से चुनाव करे जिससे उसके माता–पिता को बहुत दुःख पहुंचा। उसने अपने पहिलौठेपन को इतना तुच्छ समझा कि वह परमेश्वर के वायदे को एक बार के खाने के लिए बेचने को भी तैयार हो गया। दुर्भाग्यवश, इसहाक ने परमेश्वर की इच्छा के ऊपर अपनी इच्छा को थोपने की कोशिश करी, जब उसने याकूब की जगह एसाव को आशीष देनी चाही। वह अपनी इन्द्रियो पर निर्भर था (महसूस करना, खाना और सूंघना) न कि परमेश्वर के वचनो पर (उत्पत्ति 25:23)। इस धोखेबाजी के कारण बहुत बड़ी परेशानियाँ आई, जिसमें याकूब का 20 वर्षो के लिए अपने परिवार से अलग होना भी शामिल था और उसके बाद उसने अपनी माता रिबका को फिर कभी नही देखा। परन्तु उन वर्षो के बाद, याकूब ने अपने भाई एसाव के साथ मेल–मिलाप कर लिया। और यद्यपि इसहाक ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष पहले पूर्वज के समान अच्छे ढंग से समाप्त नही किए तौभी अन्त में वह परमेश्वर की इच्छा के आगे झुका और वह "बूढा और पूरी आयु का" होकर अपने लोगो में जा मिला। (उत्पत्ति 35:27–29) होने पाए कि हम विश्वासयोग्य और दृढ़ बने रहे ताकि हम उसकी महिमा को अंत में भी कर सके जिसको हम बहुत ही जल्द आमने–सामने देखेंगे।

सौभाग्य से, परमेश्वर की संप्रभुता मनुष्यो के चुनावो को भी पलट देती है। हम इस बात को पवित्रशास्त्र में बार–बार देखते है। निश्चय ही हम इसका सबसे प्रमुख उदाहरण उत्पत्ति 3:15 में पाते है, जहां पर मसीह के छुटकारे के कार्य की भविष्यवाणी की गई जो कि आदम और हव्वा के पापमय चुनाव को पलट देगी। परन्तु हम परमेश्वर के छुटकारे की बाते बाईबिल की छोटी कहानियों में भी देखते है। हम इसे कैन और हाबिल की दुखान्त कहानी में भी पाते है।

कैन की सम्पूर्ण वंशावली का तिरस्कार कर दिया गया शेत् उस वंशावली का पूर्वज बन गया जहां से छुड़ानेवाला आएगा। उसके बाद इसहाक, जो कि वायदे का पुत्र था उसे अब्राहम को तब भी दिया गया जब उसने परमेश्वर के कार्य को अपनी देह के द्वारा करने की कोशिश करी। उसकी देह के पुत्र इश्माएल, को भी एक वंशावली दी गई। बाद में, यूसुफ को प्रिय का सम्मान पाने के लिए चुना गया तथा उसके भाई यहूदा को एक भावी पीढी के लिए चुना गया जिसमें से यीशु का जन्म हुआ जो कि यहूदा के गोत्र से ही थी। हम सब भी अयोग्य है, परन्तु परमेश्वर के पास सभी पीढ़ियो के लिए उद्देश्य और अनुग्रह है (रोमियों 9:10–15)। हमारे सभी पापो से भी बढ़कर परमेश्वर है और निश्चय ही वह अपनी इच्छा को पूरा करेगा तथा हर एक पीढ़ी से वह अपने वायदो को भी पूरा करता है।

अध्याय एक

वचनः उत्पत्ति 21–24

मुख्य वचनः उत्पत्ति 21:1 यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि ले के उसके साथ अपने वचन के अनुसार किया।

विषय कथन– हमारी इच्छाओं का परमेश्वर की इच्छाओं के साथ मिलना आवश्यक है ताकि परमेश्वर एक अनन्त मीरास और आशीषो को दूसरो पर उण्डेल सके।

जीवन का सिद्धांतः अब्राहम की संतान के रूप में, हमारा जन्मसिद्ध अधिकार वायदो के साथ जिम्मेदारियों को भी लाता है।

पहला दिनः

उत्पत्ति 21:1–7 पढ़े

1. अब्राहम और सारा के लिए परमेश्वर ने कौनसा वायदा पूरा किया?
2. जब इसहाक का जन्म हुआ, तब अब्राहम कितने वर्ष का था?
3. सारा ने अपने पुत्र का नाम इसहाक (हंसी) क्यो रखा? उत्पत्ति 18:13–15 को वापस जाकर देखें।
4. इस पंद्याश से हम परमेश्वर के बारे में क्या सीखते है?

दूसरा दिन

उत्पत्ति 22:1–6 पढ़े

1. परमेश्वर ने अब्राहम की कौनसी परीक्षा ली जो कि इसहाक के लिए भी एक परीक्षा थी?
2. अब्राहम इसहाक को किस पर्वत पर ले गया और वहां पहुंचने में कितने दिन लगे?
3. अब्राहम ने सेवको को क्या बताया कि वे पर्वत पर क्या करेंगे?
4. बलिदान आराधना से कैसे जुड़ा हुआ है, आप कैसे सोचते है? आज इसका उदाहरण क्या हो सकता है?
5. अब्राहम की आज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर ने उससे किस वायदे को दोहराया?

तीसरा दिन

उत्पत्ति 22:7–19

1. बलिदान के संबंध में इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से क्या प्रश्न किया?
2. इसहाक को मारने से अब्राहम को किसने रोका?

3. हमारे पापो के लिए हमारा स्थानापन्न (प्रतिस्थापन) कौन है? (यूहन्ना 1:29; 1 पतरस 1:19)
4. अब्राहम ने उस पर्वत को क्या नाम दिया?
5. उन वायदो के नाम बताये जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ दोहराए और जो अब इसहाक को भी मिलने वाले थे?
6. क्या ऐसी भी आशीषे है जो हमारी परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के कारण हमारी संतानो पर आती है?

चौथा दिनः

उत्पत्ति 24:1–25 पढ़े

1. अब्राहम ने एलीएजेर को कौनसा महत्त्वपूर्ण कार्य सौपा था?
2. अब्राहम ने एलीएजेर को दुल्हन कहाँ से लाने को कहा? क्यो?
3. एलीएजेर ने परमेश्वर के मार्गदर्शन को किस प्रकार खोजा?
4. एलीएजेर को कैसे पता चला कि रिबका ही वो स्त्री है?
5. कुछ योग्यताओं के नाम लिखो जो कि एक जीवनसाथी में होनी बहुत ज़रूरी है?
6. अपने खुद के जीवन के लिए प्रार्थना करने के बारे में आप क्या सीखते है?

पाँचवा दिन

उत्पत्ति 24:26–67 पढ़े

1. एलीएजेर ने यहोवा की उपासना कैसे करी?
2. लाबान यह कैसे जान पाया कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि रिबका की शादी इसहाक से हो?
3. हमे किस बात को याद रखने की जरूरत है जब परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है?
4. जब रिबका ने इसहाक को पहली बार देखा तो उस समय इसहाक मैदान में क्या कर रहा था?
5. इसहाक ने रिबका की ओर क्या महसूस किया?
6. परमेश्वर के वचन के ऊपर मनन (ध्यान) करने के क्या फायदे है? (भजन 119:97–104)

जब हम परमेश्वर की आज्ञा मानते है, तो हम उस पर भरोसा कर सकते है कि वह हमारे लिए पूर्ति या उपाय करेगा।

अध्याय दो

वचन– उत्पत्ति 25–28
मुख्य वचन– उत्पत्ति 26:24– "मत डर क्योकि मैं तेरे साथ हूं और मैं तुझे आशीष दूंगा"।

विषय कथन– परमेश्वर की आशीषे परमेश्वर के चुने हुए स्थानो के साथ आपस में गुंथी (बुनी) हुई है।

जीवन का सिद्धांत– हमारे पूर्वजो के पापो और श्रापो को तोड़ना ज़रूरी है ताकि हम परमेश्वर की पूर्ण आशीषो को अनुभव कर सके।

पहला दिन
उत्पत्ति 25:21–23 पढ़े
1. जब रिबका के कोई संतान नही हुई तो इसहाक ने क्या किया?
2. जब रिबका को शारीरिक पीढ़ा हुई तो उसने क्या किया?
3. रिबका के जुड़वा बच्चो के बारे में यहोवा का क्या संदेश था?

दूसरा दिन
उत्पत्ति 25:24–34 पढ़े
1. जुड़वा बच्चो में से पहले कौन पैदा हुआ? जन्मसिद्ध अधिकार किसको मिलना था?
2. एसाव और याकूब जुड़वां बच्चो के चरित्र का वर्णन करो।
3. अपने जन्मसिद्ध (पहिलौठे) अधिकार के प्रति एसाव का रवैया कैसा था?
4. इफिसियो 1:4–14 से, परमेश्वर की संतान के रूप में आपकी मीरास क्या है?
5. अपने जन्मसिद्ध अधिकार के प्रति आपका रवैया कैसा है?

तीसरा दिनः
उत्पत्ति 26 पढ़े
1. अकाल के समय पर इसहाक मिस्त्र में क्यो नही गया?
2. इसहाक से परमेश्वर ने किन वायदो को दोहराया?
3. अब्राहम का कौनसा पाप इसहाक के जीवन में भी दोहराया गया?
4. अबीमेलेक और उसके लोगो ने इसहाक के परिवार में क्या देखा?
5. इस संसार में आपके जीवन तथा गवाही के बारे में लोग क्या कहते है?
6. आप क्या चाहते है कि लोग आपके बारे में कहे?

चौथा दिन

उत्पत्ति 17 पढ़े

1. क्या कारण था कि इसहाक याकूब की जगह एसाव को आशीष देना चाहता था?
2. किसने किसको धोखा दिया?
3. इस पाप का परिवार के ऊपर क्या प्रभाव पड़ा?
4. आपके परिवार में ऐसा कौनसा पाप है जो परमेश्वर चाहता है कि आप देखे?

पाँचवा दिन

उत्पत्ति 28:1–30 पढ़े

1. एसाव याकूब के प्रति कैसा अनुभव कर रहा था?
2. इसहाक के पुत्र याकूब ने घर क्यो छोड़ा (अपनी माता से दूर क्यो गया)?
3. माता–पिता की चेतावनी के बावजूद एसाव से किससे विवाह किया?
4. क्या परमेश्वर इस बात की चिन्ता करता है कि हम किससे विवाह करते है? (2कुरिन्थियो 2:14–16)
5. परमेश्वर ने अब्राहम के वायदे को याकूब के साथ कैसे दोहराया? वह वायदा क्या था?
6. प्रेरितो 3:25 परमेश्वर की एक संतान के रूप में जातियों (देशो) के लिए आशीष होने के विषय में क्या कहता है?

हमारे पूर्वजो के पापों को तोड़ना बहुत ज़रूरी है ताकि परमेश्वर की सम्पूर्ण आशीष को पाया जा सके।

बाईबिल के महापुरूष

याकूब

परिचय
उत्पत्ति 27–36

मुख्य आयत
उत्पत्ति 28:13 "मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर हूँ, जिस भूमि पर तू लेटा है, उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को दूँगा"।

सिद्धांत
परमेश्वर दोषपूर्ण लोगो को उसके उद्देश्यो को पूरा करने के लिए चुनता है।

उद्देश्य
कठिन अनुभव परमेश्वर पर भरोसा करने के अवसर है तथा ये हमारे चरित्र को भी बदलते है जब हम परमेश्वर के साथ गहराई या घनिष्ठता में आगे बढ़ते है।

प्रार्थना करने के लिए प्रार्थना
भजन संहिता 121

सारांश
याकूब इसहाक का पुत्र था। उसके द्वारा परमेश्वर वायदा किए हुए वंश को निरंतर बनाए रखेगा। उसके द्वारा परमेश्वर अपने प्रकाशन को मनुष्य को दिखाता रहेगा।

याकूब का व्यक्तित्व उसके पिता इसहाक के व्यक्तित्व से बिल्कुल विपरीत है। इसहाक का विश्वास अधीन और धैर्य वाला था जबकि याकूब का विश्वास इससे बिल्कुल विपरीत था। याकूब असीम शक्ति वाला एक मनुष्य था। वह एक ताकतवर व्यकित था जिसके पास केन्द्रित बल था। वह षडयंत्रकारी था। याकूब एक स्नेह वाला व्यक्ति था। उसका विश्वास बहुत बड़ा था। वह कठिन परिश्रम करने वाला था। वह काफी गंभीर तथा अपनी सोच में दृढ़ और महान् गौरवशाली था। परमेश्वर ने याकूब को तब तक अनुशासित किया, जब तक वह उसे पकड़कर विनती करता रहा। याकूब एक शक्तिशाली व्यक्ति बन गया। उसने परमेश्वर के वायदो को गंभीरता से समझना तथा उसके अनुसार जीवन जीने को चुना। हम इसहाक के जीवन को कुछ

अध्यायो में ही देखते है जबकि याकूब की जीवनी उत्पत्ति के अन्त तक जारी रही, यद्यपि बाद में उसके पुत्र यूसुफ द्वारा उसे थोड़ा कम कर दिया गया।

परमेश्वर ने याकूब का इतना सम्मान किया कि उसने अपने नाम का याकूब के साथ जोड़ लिया और स्वंय को याकूब का परमेश्वर बुलाने लगा (देखे निर्गमन 3:6) इस बात को सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में बार–बार दोहराया गया है। परमेश्वर ने अपने "चुने हुए देश (जाति)" को भी याकूब के दूसरे नाम से नियुक्त किया, जो कि इस्त्राएल कहलाया, यह नाम उसे पनीएल में दिया गया (उत्पत्ति 32:28)। भजन संहिता 135:4 कहता है, "तू मेरा सेवक है"। यशायाह 43:1–2 में, हम याकूब/इस्त्राएल की एक बहुत सुंदर तस्वीर को देखते है, कि वह परमेश्वर का निज धन है। याकूब के ठोस गुणो के मूल्य ने उसकी कमजोरियो को पीछे छोड़ दिया, इन कमजोरियो को भी परमेश्वर ने उसके बाद के जीवन में सुधारा। जैसे–जैसे याकूब ने परमेश्वर के निर्देश के प्रति जबाव दिया, हम देखते है कि परमेश्वर उसे बदलता जाता है। इसी बात की हम भी इच्छा करते है और इस बात को हमें आलिगंन भी करना चाहिए।

याकूब का जन्म इसहाक की सच्ची और निरंतर प्रार्थना का ही उत्तर था। इसहाक साठ वर्ष का होने वाला था, जब उसकी प्रिय पत्नी ने जुड़वा बच्चो को जन्म दिया। जब उसे उसके गर्भधारण के दौरान परेशानी हुई तो उसके विश्वास ने उसकी अगुवाई करी कि वह प्रार्थना में परमेश्वर से इसका जबाव मांगे। यहोवा परमेश्वर ने उसके जुड़वा पुत्रो के संबंध में एक अद्भूत भविष्यवाणी करी (25:22–23)। रिबका ने गलत उद्देश्यो के साथ संघर्ष किया ताकि वह इसे पूरा होते हुए देख सके। रिबका याकूब से बहुत स्नेह करती थी क्योकि याकूब परमेश्वर के वायदो की कद्र करता था तथा याकूब को ही परमेश्वर ने चुना था। उसने अपने पुत्र के भीतर जन्मसिद्ध (पहिलौठे) अधिकार की बातो के बारे में गहरा सम्मान पैदा किया, क्योकि इसमें ही उसके दादा अब्राहम और पिता इसहाक के साथ परमेश्वर ने वाचा बांधी थी।

याकूब के जन्म से संबंधित भविष्यवाणी के 4 भाग हैः

1. दो जातिया (देश) एदोम और इस्त्राएल बनेंगे।
2. रिबका के गर्भ में से दो राज्य निकलेंगे जो एक–दूसरे से बिल्कुल अलग होंगे।
3. एक राज्य दूसरे राज्य से ज्यादा सामर्थी होगा।
4. बड़ा बेटा छोटे बेटे के अधीन होगा और उसकी सेवा करेगा।

पद और नेतृत्व के लिए परमेश्वर का याकूब को चुनना सार्वभौमिक था। याकूब ने पहिलौठे पन (जन्मसिद्ध अधिकार) का सम्मान किया जबकि एसाव ने इसे तुच्छ जाना। यह समझना कठिन है कि इसहाक ने परमेश्वर के इस प्रकाशन को नजरअंदाज क्यो किया और इसे एसाव पर

थोपने की कोशिश क्यो करी। इस पक्षपात या तरफदारी के कारण हम पाते है कि परिवार में एक संघर्ष भी पैदा हो गया। पक्षपात या तरफदारी एक पाप है जो कि इस परिवार में चलता ही रहा। आनेवाले अध्यायो में याकूब ने यूसुफ से ज्यादा स्नेह किया या उसकी तरफदारी करी। हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे परिवारो के उन क्षेत्रो को हमे दिखाए जिन्हे हम अपनी पीढ़ी में बंद कर सके। हम आनेवाली पीढ़ियो के लिए बदलाव के सूत्रधार बन सकते है।

क्या हम अपने जन्मसिद्ध अधिकार का सम्मान करते है? या फिर हम एसाव के समान है, जिसने परमेश्वर के वरदानो और वायदो को तुच्छ जाना? क्या हम, एसाव के समान होना चाहेंगे, जिसने जानबूझकर इस जीवन के आनन्दो के लिए और उसके बदले परमेश्वर का इंकार या तिरस्कार कर दिया? इब्रानियों 12:17 हमें बताता है कि परमेश्वर ने भी उसका तिरस्कार कर दिया।

शायद आपके पास भी याकूब के समान एक आत्मिक जन्मसिद्ध अधिकार होगा। क्या आपका जन्म एक मसीह परिवार में हुआ जहां से आप परमेश्वर के वचन के सत्य को जान पाए? क्या आप अपने परिवार में से पहले हो जो इस मीरास (विरासत) को आगे ले जाएगा? क्या आप अनन्त जीवन के "उद्धार" के दान के बारे और नया जन्म के बारे में जानते हो? जो आपके पास है उसका आप कितना सम्मान या मूल्य करते हो? क्या आप अपनी जिम्मेदारी, आपकी विरासत और जन्मसिद्ध अधिकार की सराहना करते हुए उसे गंभीरता से निभाते हो?

हमें याकूब, अपने भाई तथा पिता के प्रति निष्ठाहीन और अविश्वासयोग्य लगता होगा। हम शायद उसे आशाहीन, बेघर तथा तिस्कृत देखते होंगे। तौभी परमेश्वर ने याकूब का पीछा किया (28:12) और उससे स्वप्न में बाते करी। वह अपनी वाचा की उसके साथ पुष्टि करता है और उसके साथ रहने का वायदा भी करता है। याकूब ने एक पत्थर लिया, उस पर तेल डाला और एक वाचा बांधी या शपथ खाई। उसने उस स्थान का नाम बेतेल रखा क्योकि वहां पर परमेश्वर की उपस्थिति थी। (32:23–31)

बीस वर्षो के बाद जब वह भयभीत होकर घर वापस आ रहा था। तो अपने भाई एसाव से मिलने से ठीक पहले परमेश्वर याकूब से मिलने आता है। वचन में याकूब के जीवन का बहुत सी घटनाओं का वर्णन है। उसके पापो और उसके विश्वास के साथ परमेश्वर अनुग्रह से व्यवहार करता है, वह उसे ताड़ना देता, स्वंय का प्रकाशन दिखाता, और डांटता है, ये सब बाते मिलकर याकूब के चरित्र का निर्माण करती है। हम देखते है कि परमेश्वर अपने राज्य के उद्देश्यो को पूरा करने के लिए मनुष्यों के पापमय कार्यो को नियंत्रण करने के लिए सामर्थ प्रदान करता है। एक भी पुत्र कनान देश का वारिस होने के लिए योग्य अधिकारी नही था। इसकी जगह याकूब

के बारह पुत्रो ने उसके नाम को हर एक गोत्र के लिए दिया। रूबेन, शिमौन और लेवी, यहूदा, दान, नप्ताली, गाद, अशेर, इस्सकार, जबूलून, यूसुफ और बिन्यामीन। यही इस्त्राएल के इतिहास का इतिहास बना, जिसका लेखा, पुराना नियम में मिलता है।

वायदे के देश में से जबरन निकल जाना उसके पाप का ही परिणाम था। तौभी परमेश्वर ने अपने आपको निज़ी तौर पर याकूब के सामने प्रगट किया। इस अनुभव के द्वारा याकूब परमेश्वर को अपने परमेश्वर के रूप में जानने लगा। उसकी पहली मुलाकात में उसने एक स्वप्न द्वारा देखा कि परमेश्वर उसके पास आ रहा है। उसने स्वर्ग तक की सीढ़ी का दर्शन (स्वप्न) देखा। यह स्वप्न इस तथ्य को बताता है कि परमेश्वर ने याकूब और उसके मध्य में वार्तालाप का एक रास्ता बना दिया है। परमेश्वर के दूतो को बाईबिल में 'संदेशवाहक' कहा गया है। इब्रानियों 1:14, जो सेवा के लिए भेजे जाते है।

इस स्वप्न में वे स्वर्ग से सीढ़ियों द्वारा चढ़ और उत्तर रहे थे तथा याकूब के पास परमेश्वर का संदेश ला रहे थे। परमेश्वर ने अब्राहम और इसहाक के समान याकूब को भी 4 वायदे दिए। पहला देश, दूसरा– याकूब का वंश, तीसरा– सारी जातियाँ (संसार) तेरे और तेरे वंश द्वारा आशीष पांएगे (जो बताता है कि प्रभु यीशु मसीह उसकी वंशावली द्वारा ही आएगा) चौथा– उसकी उपस्थिति का वायदा। ये सभी वायदे उसकी पीढ़ियो द्वारा भी दोहराए गए (निर्गमन 3:12; यहोशू 1:9; भजन 23:4; यशायाह 41:10; 13–14, 17–18 और 43:1–2)

याकूब 20 वर्षो के बाद बड़े भय और चिंता के साथ अपने भाई एसाव से मिलने के लिए घर वापस आता है। वह सुनता है कि उसका भाई एसाव भी 400 पुरूषो के साथ उससे मिलने आ रहा है। याकूब योजना बनाता है परन्तु उसके बाद वह प्रार्थना में प्रभु की ओर मुड़ता है (32:9–12)। उसे परमेश्वर के वायदो तथा अपनी अयोग्यता की याद दिलाई जाती है तथा वह इसका अंगीकार भी करता है। वह परमेश्वर के वायदो को थामे रखता है। यह रात हमें उत्पत्ति 28:12 की याद दिलाती है, जब याकूब ने अपना परिवार छोड़ा था। परमेश्वर ने उसे 20 वर्षो तक अनुशासित और दीन बनाया था। परमेश्वर ने उसे उसके ससुर लाबान की अधीनता में परिस्थितियों द्वारा अपने स्वभाव के अनुसार बनाया।

अब याकूब अपने नए जीवन की शुरूआत परमेश्वर के साथ मुलाकात और उसके सामने सम्पूर्ण समर्पण के साथ शुरू करता है। यह समझ पाना बहुत ही कठिन है कि यह संघर्ष कितना शारीरिक और कितना आत्मिक था। 'परमेश्वर के दूत' के रूप में वह परमेश्वर द्वारा रोका गया। परमेश्वर चाहता था कि याकूब इस बात को जान ले कि वह स्वंय की शारीरिक और बौद्धिक शक्ति के द्वारा उसकी मीरास में प्रवेश नही कर सकता है। आत्मिक शक्ति केवल परमेश्वर द्वारा

ही आती है (भजन 62:11)। यह न तो बल से (धन–सम्पदा) और न शक्ति से (दिमाग, योजना, व्यक्तित्व) परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओ के यहोवा का यही वचन है"। तभी परमेश्वर के उद्देश्य पूरे होते है (जकर्याह 4:6)।

कभी–कभी परमेश्वर हमें आत्मिक मीरास मे तब तक प्रवेश नही करने देता जब तक कि हम स्वंय को दीन करने परमेश्वर पर निर्भर नही होते। उसे शायद हमारे आत्मविश्वास को तोड़ना पड़ेगा जैसा कि उसने पूरी रात याकूब के साथ मल्लयुद्ध करके करा ताकि वह उसे तोड़ सके और उसने याकूब की जांघ के जोड़ में जंघानस को छुआ। उसने याकूब से कहा कि अब से उसका नाम इस्त्राएल होगा। याकूब ने उस स्थान का नाम पनीएल रखा जिसका अर्थ है, "परमेश्वर का चेहरा"।

आइए हम जांचकर स्वंय को देखे कि वो जगह कौनसी है जिसमें हम खुद की सामर्थ से रास्ता बनाकर अन्दर जाने की कोशिश करते है। आप किसकी सामर्थ पर ज्यादा निर्भर रहते है? क्या हम याकूब के व्यवहार में नम्रता और दीनता के अंतर को देख सकते है जब वह एसाव को वह आदर और सम्मान देता है जिसके वह योग्य है। यह बात एसाव के लिए भी एक मार्ग बनाती है कि वह अपने भाई याकूब को माफ करे और उसे फिर से अपना भाई स्वीकार कर ले। वह अपने भाई एसाव के सामने सात बार झुकता है तब एसाव भागकर अपने भाई को गले लगाता और चुमता तथा रोता है। इस प्रकार के स्वागत की याकूब ने भी आशा नही करी थी। लेकिन अब नफरत की जगह पर प्रेम तथा क्षमा है।

जब हम अपने आपको परमेश्वर के सामने दीन बनाते और उसे अनुमति देते है कि वह हमें तोड़े तो वह हमारे संबंधो को भी चंगा या सही कर देता है। याद रखे कि उसकी सम्पूर्ण आशीष आपके लिए उपल्बध है। परन्तु यह केवल यीशु मसीह की मृत्यु के साथ हमारी पहचान होने के द्वारा ही आती है (रोमियों 6:5 और गलातियों 2:20)। स्वंय को मारकर ही हम सचमुच जीवित रहते है। यह सुनना हमारे लिए काफी कठिन है कि बाईबिल हमे स्वंय को मारने के लिए कहती है ताकि वो आत्मिक विजय हमें मिले जो कि हमारी आत्मा को एक लम्बी अंधकार भरी रात में संघर्ष (मल्लयुद्ध) करने के द्वारा आती है। क्या हमारे पास परमेश्वर के लिए यह इच्छा है कि वह हमारे पास आए, और हमें आशीष दे चाहे उसके लिए हमें चोंट भी क्यो न खानी पड़ी?

याकूब सिद्ध नही है। हम अभी भी उसके जीवन से कुछ बातो को देखते है जिन्हे वह पकड़ा हुआ था। हाँ, इसे हम उसके बेतेल में बिताएं यादगार समय के बाद भी देखते है (बेतेल का अर्थ है परमेश्वर का घर) कुछ कारण से भय का समय कुछ कम हो गया। हम पाते है कि जब याकूब के ऊपर से दबाव कम हो गया तो वह आगे नही बढ़ा। उसका परिवार एक अधर्मी

वातावरण के बीच में पड़ गया। वह कनान देश की बाहरी सीमाओं पर रहने लगा। परमेश्वर की इच्छा से बाहर रहना हमारे लिए या दूसरो के लिए भी उत्तम नही है। हमारा विश्वास हमें तथा दूसरो को भी आगे बढ़ाता है। हमें इसे पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ मानना और अनुकरण करना चाहिए।

परमेश्वर ने याकूब को बेतेल बुलाया। उसने एक वेदी बनाई। उसने अपने परिवार में अधि/नियंत्रण को लिया और उन्हे अन्य देवी–देवताओ से छुटकारा दिलाकर उन्हे पवित्र किया। चौथी बार परमेश्वर उसके सामने प्रगट हुआ और उसका नाम याकूब से बदलकर इस्त्राएल रख दिया। यहोवा ने उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं, तू फूले–फले और बढ़े और तुझ से एक जाति वरन् जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होगी और तेरे वश से राजा उत्पन्न होंगे। और जो देश मैं ने अब्राहम और इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता हूँ और तेरे पीछे वंश को भी दूंगा"। (35:11–12)

इसके बाद याकूब को उसके खुद के बेटो ने यूसुफ की मृत्यु के बारे में धोखा दिया। इसके लिए उसने वर्षो तक शोक किया होगा। परमेश्वर ने यूसुफ का इस्तेमाल किया ताकि वह अपने चुने हुए परिवार को बचा सके तथा उन्हे मिस्त्र में गोशेन नाम स्थान पर बसा दे, जहां पर बाद में वे एक बड़ी जाति/देश बनते है। परमेश्वर यहोवा ने अध्याय 46 में याकूब/इस्त्राएल से रात में एक दर्शन के द्वारा बात करी कि याकूब अपने परिवार सहित मिस्त्र में जाएं। इसके द्वारा उसका पूरा घराना उस अकाल से बच जाएगा तथा याकूब एक बार फिर से अपने प्रिय पुत्र के साथ मिल जाएगा जब उसने अपने जीवन में पीछे मुड़कर देखा होगा तो निश्चय ही वह हैरानी के साथ अपनी आंखो से देख रहा होगा कि कैसे परमेश्वर ने उसके परिवार और उसके चुने हुए लोगो को लेकर चला कि वे उसके पिता के परमेश्वर की आज्ञा माने और परमेश्वर के महान उद्देश्यो के लिए अपने आपको परमेश्वर के हाथो में समर्पण करे।

याकूब को पूर्ण भरोसा था कि एक दिन परमेश्वर उसके वंश को वापस कनान लेकर आएगा। उसके यूसुफ को दिए गए निर्देश कि उसकी देह को मिस्त्र से बाहर उस जगह पर दफनाया जाएं जहां उसकी पीढ़ियां (वंशज) 400 वर्ष बाद रहेगी इस बात का सबूत देती है कि वायदे के देश के लिए उसने अपना भरोसा परमेश्वर पर रखा हुआ था। हमें जीवन को एक तैयारी के रूप में भी देखना चाहिए, क्योकि यह हमारे भविष्य के जीवन और स्वर्ग में हमारी मीरास को भी प्रभावित करते है।
1कुरिन्थियो 3:13–15 और फिलिप्पियो 3:20–21

याकूब इसहाक को धोखा देता है, स्वंय याकूब को भी धोखा मिलता है। परमेश्वर ठोकरो का इस्तेमाल याकूब के चरित्र (स्वभाव) को बनाने के लिए करता है। आपको कौनसी बात चोट पहुंचाती है, उसी के द्वारा परमेश्वर आपके अंदर परिवर्तन ला रहा है। क्या आप उस यादगार पत्थर को पहचान सकते है, वो विशेष स्थान जहां आप परमेश्वर से मिले थे?

क्या परमेश्वर आपका पीछा कर रहा है कि आप धीमे हो जाए, उसकी सुनी, उसकी आज्ञा माने और आशीष पाए?

याकूब अध्याय 1
याकूब ने धोखा दिया और उसे भी धोखा मिला।
आयत –भजन संहिता 115:11 हे यहोवा के डरवैयो, यहोवा पर भरोसा रखों। तुम्हारा सहायक और ढाल वही है।
पंद्याश– उत्पत्ति 25, 27–29

पहला दिन– उत्पत्ति 25:19–34 पढ़े
1. किसने एक पुत्र के लिए प्रार्थना करी, और क्यो?
2. परमेश्वर ने इसहाक की प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया?
3. परमेश्वर ने रिबका की संतानो के बारे में उनके जन्म से पहले क्या कहा?
4. जब लड़के बड़े हुए तो हम उनके बारे में क्या जानते है?

दूसरा दिन– उत्पत्ति 27:1–29 पढ़े
1. इसहाक का कौनसा पुत्र पहिलौठे और आशीष के लिए अधिकृत या चुना गया था?
2. कौनसे पुत्र को परमेश्वर से पहले से ही वाचा की मीरास को पाने के लिए चुन लिया था? (देखे उत्पत्ति 25:22–23)
3. इस पुत्र ने आशीष पाने के लिए क्या किया था? यह हमें परमेश्वर के विषय में क्या बताता है? (भजन 115:3, और रोमियों 9:11–18)
4. उत्पत्ति 25:29–34 और 26:34–35 में आप क्या पढ़ते है जो कि एसाव द्वारा अपने पहिलौठेपन (जन्मसिद्ध अधिकार) से अलग होता हुआ दिखाता है।
5. आयत 18–24 में आप कितने झूठो को गिन सकते है?

तीसरा दिन– उत्पत्ति 27:30–41 पढ़े
1. रिबका और याकूब के द्वारा बनाई गई धोखे की योजना के परिणाम का वर्णन करे।
2. किस क्षेत्र में आप किसी को नियंत्रित करने की कोशिश करते है?
   क्या आज भी स्त्रियों के लिए यह एक कमज़ोर क्षेत्र है?
3. एसाव ने बदला लेने के लिए क्या कदम उठाया?

चौथा दिन– उत्पत्ति 28
1. इसहाक ने याकूब को क्या आज्ञा दी और यह क्यो बहुत महत्त्वपूर्ण थी?
2. एसाव ने किससे और क्यो विवाह किया?
3. याकूब के स्वप्न और उससे किए गए वायदे का वर्णन करे।
4. याकूब ने उस जगह का नाम बेतेल क्यो रखा? "बेतेल" का अर्थ है परमेश्वर का घर।

5. याकूब ने परमेश्वर के सामने क्या शपथ खाई?
6. क्या आपने कभी कोई शपथ खाई है; उस समय क्या परिस्थितियाँ थी?

पाँचवा दिन– उत्पत्ति 29 पढ़े

1. याकूब अपनी दुल्हन से कहां मिला?
2. क्या आप उत्पत्ति अध्याय 29 और 24 के बीच में कोई समानताएं देखते हो, जब इसहाक के लिए (दुल्हन) पत्नी मिली थी (याकूब का पिता इसहाक)?
3. लाबान के परिवार में याकूब का किस प्रकार स्वागत किया गया?
4. अपने परिवार के लिए याकूब को कितने (वर्षो) समय तक काम करना पड़ा?
5. याकूब को उसके ससुर द्वारा कैसे धोखा दिया गया?
6. आप क्या सोचते है कि क्या याकूब ने यह सोचा होगा कि जैसे उसने अपने भाई और पिता को धोखा दिया था अब वैसे ही उसे भी धोखा मिल रहा है?
7. परमेश्वर ने लिआ के प्रति अपना प्रेम कैसे दिखाया?
8. परमेश्वर ने अपना प्रेम आपको कैसे दिखाया है?

परमेश्वर अपने उद्देश्यो को पूरा करने के लिए गलत चुनावो का भी इस्तेमाल कर सकता है।

याकूब अध्याय 2
"परमेश्वर याकूब का पीछा करता है।"
पद्यांश– उत्पत्ति 30–32
मुख्य वचन– उत्पत्ति 32:26(b) "जब तक तू मुझे आर्शीवाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा।"

पहला दिन– उत्पत्ति 29:31 अध्याय 30:1–24 पढ़े

1. किसको कोई संतान नही थी? क्या यह आपको उत्पत्ति में से किसी और की याद दिलाता है?
2. राहेल को संतान देने वाला कौन था? (भजन 139:13 भी देखे)
3. क्या आप याकूब के पुत्रो के नाम लिख सकते है?
4. राहेल के पुत्र का क्या नाम था?
5. इस घराने में दो पत्नियों के कारण होने वाली समस्याओ का वर्णन कीजिए।

दूसरा दिन– उत्पत्ति 30:25–43 पढ़े

1. क्या याकूब लाबान के लिए एक अच्छा काम करने वाला था?
2. ये आयते हमें क्या बताती है कि हमे कैसे अपने कार्यो को करना चाहिए? (कुलुस्सियों 3:22–25; 1पतरस 2:18–20)
3. क्या यह आपके कार्यो को दिखाता है जो आप घर पर या फिर दूसरो के साथ करते हो?

तीसरा दिन– उत्पत्ति 31

1. किन परिस्थितियों ने यह बात याकूब को स्पष्ट कर दी कि अब यहां से निकलने का समय आ गया है?
2. याकूब ने लाबान को कैसे धोखा दिया (20)?
3. राहेल ने अपने पिता को कैसे धोखे में रखा (19)?
4. क्या यह एक पाप हो सकता है जिसे तोड़ने की जरूरत है?
5. घर छोड़ने के बाद से परमेश्वर ने याकूब को कैसे आशीषित किया था?
6. लबान को किसने चेतावनी दी कि वह याकूब को हानि न पहुचाएं?
7. क्या आप अपने उन पापों को पहचान सकते है जो अभी भी आपके अंदर या आपके बाहर आपके साथ जुड़े या लटके हुए है?

चौथा दिन– उत्पत्ति 31 पढ़े

1. इस अध्याय में कौनसी आयते है जो यह दिखाती है कि लाबान द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने के बावजूद भी याकूब ने परमेश्वर की स्तुति करी?

2. इब्रानियों 12:14–15 और इफिसियों 4:31–32 हमें कैसे निर्देशित करते है?
3. याकूब और लाबान के लिए उन पत्थरो का क्या अर्थ था?
4. आपके साथ हाल ही में या अतीत में हुए अन्यायों के साथ आप कैसा व्यवहार करते है या उनसे कैसे निपटते है?

पाँचवा दिन– उत्पत्ति 32–33:9 पढ़े

1. याकूब की यात्रा के दौरान कौन उसे मिला जिसने उसे उत्साहित किया?
2. याकूब के अन्दर अभी भी कौन सा पाप था जब वह अपने घर के करीब आ रहा था (आयत 7)?
3. याकूब किसके पास भय और ईमानदारी के साथ गया?
4. अब्राहम, इसहाक और अब याकूब के परमेश्वर के साथ याकूब की मुलाकात (सामना) के बारे में बताए?
5. जब याकूब ने परमेश्वर के साथ मल्लयुद्ध किया तो उसने कौनसी बात की सबसे ज्यादा इच्छा करी?
6. परमेश्वर ने याकूब का नाम बदलकर क्या रखा?
7. क्या आप भी परमेश्वर द्वारा आशीष पाने की इच्छा करते हो?
8. क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके साथ आपको मेल–मिलाप करने की जरूरत है ताकि आप आशीषित हो सके?

जब हमारा विश्वास आगे बढ़ता है तो दूसरो का विश्वास भी आगे बढ़ता है।

याकूब अध्याय 3
"परमेश्वर याकूब को शांति प्रदान करता है।"
पंद्याश उत्पत्ति 31–33
आयत

पहला दिन– उत्पत्ति अध्याय 31 पढ़े

1. किन परिस्थितियों ने याकूब को यह निर्णय लेने पर मज़बूर किया कि वह अपने पूर्वजो के देश में वापस जाएगा?
2. आयत 13 में परमेश्वर याकूब को कौनसी बात याद दिलाता है?
3. याकूब और राहेल के द्वारा आयत 17:21 में कौनसे धोखे दिए गए?
4. क्या कोई ऐसे पाप है जिन्हे हमे देखने कि जरूरत है कि कही वे दूसरो तक न पहुंच जाए?
5. परमेश्वर से प्रार्थना में मांगे कि वह आपके हृदय के उस गुप्त पाप को खोजे जिसे शायद आप भी नही देख पाते है?

दूसरा दिन– उत्पत्ति 31:42–56 पढ़े

1. याकूब की 20 वर्षो तक रक्षा करने और पूर्ति करने वाले के रूप में वह किसे पहचान पाया?
2. याकूब ने लाबान के साथ किस प्रकार की शांति की वाचा बांधी?
3. क्या यह जरूरी है कि हम उन लोगो के साथ मेल–मिलाप करे या शांति बनाए जिन्होने हमे अतीत में ठेस पहुंचाई थी?
4. नीतिवचन 16:7 में हम कौनसा वायदा देखते है?

तीसरा दिन– उत्पत्ति 32:1–8 पढ़े

1. याकूब को मार्ग में कौन मिला?
2. याकूब अपने भाई एसाव से मिलने से क्यो डर रहा था? आप क्या सोचते है?
3. अब्राहम और इसहाक के परमेश्वर से प्रार्थना करते समय याकूब ने प्रार्थना में और क्या बात शामिल करी?
4. क्या आप इस में एक प्रार्थना की रीति (पद्धति) को देखते है?
5. उन उपहारो का वर्णन करे जो याकूब ने अपने भाई एसाव के लिए उससे आगे भेजे?
6. याकूब ने वो उपहार क्यो भेजे? (आयत 20)
7. क्या याकूब को डरने या व्याकुल होने की आवश्यकता थी?

चौथा दिन– उत्पत्ति 33:22–31 पढ़े

1. जब याकूब अकेला था, तो रात में कौन उसके पास आया और उस रात को क्या हुआ?

2. याकूब के लिए कौनसा निवेदन ज्यादा जरूरी था?
3. परमेश्वर ने याकूब का नाम बदलकर उसे क्या नाम दिया?
4. परमेश्वर ने उसका नाम क्यो बदला? आप क्या सोचते है?
5. क्या आप भी परमेश्वर द्वारा आशीष पाने की इच्छा रखते है?

पाँचवा दिन– उत्पत्ति 33:1–11

1. याकूब ने अपने भाई एसाव का अभिवादन कैसे किया?
2. याकूब के प्रति एसाव का प्रत्युत्तर क्या था?
3. क्या ऐसा कोई अतीत का रिश्ता है जिसे परमेश्वर को सुधारने की जरूरत है?
4. क्या ऐसे ह्रदय है जिन्हे परमेश्वर बदल सकता है?
5. उत्पत्ति 39:9–12 में आई याकूब की प्रार्थना का अवलोकन करे, स्तुति के साथ आरंभ होकर, परमेश्वर से एक वायदे को प्राप्त करना।

"परमेश्वर एक व्यक्ति को तब तक पूर्ण रीति से आशीष नही दे सकता जब तक वह विजयी नही हो जाता।"..... ई.एम. टोज़र।

बाईबिल के महापुरूष

यूसुफ

समीक्षा

यूसुफ बाईबिल के सबसे सुंदर किरदारो (नायको) में से एक है और उसकी कहानी हमें बहुत सी आत्मिक आशीषो को प्रदान करती है। वह परमेश्वर के दास के रूप में एकाग्र भक्ति, हृदय की पवित्रता, नम्रता, धीरज, सहनशीलता और गौरव के साथ खड़ा होता है। कई तरह से वह मसीह की एक पूर्वछाया भी है। उसे उसके पिता द्वारा चुना गया तथा भाईयों द्वारा तिरस्कृत (इंकार) किया गया और 20 चाँदी के सिक्को के लिए धोखा दिया गया। और मसीह की तरह ही, जो उसके साथ हुआ उसके कारण वह कड़वाहट से नही भरा। इसके बजाय, जिन्होने उसे सताया था दुःख पहुंचाया उनको उसने माफ कर दिया तथा महा विपत्ति के समय उसने अपने हृदय को नम्र कर दिया। मसीह के समान ही, "उसने दुःख उठा–उठाकर आज्ञा माननी सीखी"। (इब्रानियों 5:8) और अंत में, उसे सामर्थ के साथ ऊँचा उठाया गया तथा उसने अपने पद और प्रभाव का इस्तेमाल उन्हे संरक्षण देने के लिए किया जोकि बाद में इस्त्राएल देश (जाति) बना।

यूसुफ की कहानी की परिक्षाओं और सफलताओं के द्वारा हम संसार में होने वाली घटनाओं के ऊपर परमेश्वर की अद्भूत सार्वभौमिकता को भी देख सकते है। यूसुफ को मिस्त्र में लाना तथा उसे फिरौन के बाद सबसे शक्तिशाली या अधिकार सम्पन्न बनाने के द्वारा परमेश्वर ने अपने छुटकारे के इतिहास के उद्देश्यो को पूरा किया तथा इस्त्राएल को अपने चुने यंत्र के रूप में संसार के लिए विकसित किया। तो इस प्रकार से हम देखते है कि परमेश्वर विपत्ति के समय न केवल हमारी आत्माओं को बचाते है बल्कि वह मानवजाति के लिए अपने महान् उद्देश्यो को भी इसके द्वारा पूरा करता है। वह सर्वोच्च रूप से भला और शक्तिशाली परमेश्वर है।

परिवारिक धोखा

उत्पत्ति अध्याय 37 से यूसुफ की कहानी आरंभ होती है, जब वह 17 साल का था तथा अपने पिता याकूब के लिए चरवाहे का कार्य करता था। यूसुफ से उसके पिता याकूब तो प्रेम करते थे परन्तु उसके भाई उससे घृणा (नफरत) करते थे। वह याकूब की प्रिय पत्नी राहेल द्वारा पैदा हुआ पहली संतान या पहिलौठा था। कई वर्षो तक बांझ रहने के बाद उसने यूसुफ को जन्म दिया। राहेल के लिए जो याकूब के अंदर प्रेम था, वही प्रेम अब वह यूसुफ से भी करता था। उसने उस जवान (यूसुफ) को एक विशेष अगंरखा दिया तथा उसके अन्य भाईयों के ऊपर उसे निरीक्षक बना दिया, शायद यह याकूब द्वारा उठाया हुआ सही कदम नही था। यह बात यूसुफ

के आधे (सौतेले) भाईयों के हृदयो के अंदर उसके प्रति बहुत ज्यादा नफरत पैदा करने वाली साबित हुई और यहां तक बढ़ गई कि वे उससे बिल्कुल भी बात नही करते थे। और हम कल्पना कर सकते है, इससे यूसुफ को बहुत दुःख पहुंचा होगा तथा इससे परिवार ने भी क्लेश उत्पन्न हो गया।

परन्तु परमेश्वर का हाथ यूसुफ के ऊपर था अपने भविष्य से सम्बंधित प्रकाशनो को उसने सीधे कई स्वप्नों के द्वारा प्राप्त किया, जिनको उसने अपने परिवार को भी बताया, जो कि शायद यूसुफ द्वारा सही कदम नही था। यद्यपि उसके स्वप्न सत्य थे परन्तु अपने भाईयों से उनके बारे में बताने से उनके अंदर उसके लिए नफरत और भी बढ़ गई तथा अन्त में इस बात ने उन्हे उसको मारने का षड्यंत्र रचने के लिए उकसाया। यह हमारे लिए भी एक सबक हो सकता है कि जब परमेश्वर कुछ चीज़ो को हमारे लिए प्रगट करता है तो हमे परखना और जांचना है कि किसको उसके विषय में बताएं और किसको न बताएं। (1कुरिन्थियो 2:8–9, 14)

यूसुफ को हानि पहुंचाने का एक मौका उस समय आया जब याकूब ने यूसुफ को उसके भाईयों का पता लगाने के लिए भेजा। उसने उन्हे खोजा और जब उन्होने उसे दूर से ही पहचान लिया तो उन्होने एक योजना (षड्यंत्र) बनाई। केवल रूबेन ने ही, जो कि सबसे बड़ा था, यूसुफ को मार डालने का विरोध किया। उसने उन्हे राज़ी करा कि वे यूसुफ को एक खाली गड्डे में डालकर, मरने के लिए छोड़ देंगे। यह एक दुःखद कहानी है। भाईयों ने न केवल उसके विशेष अगंरखे को उसके शरीर से उतारा बल्कि अध्याय 42:21 में हम पढ़ते है कि जब वे खाना खा रहे थे तो गड्डे में से यूसुफ ने उनसे विनती भी थी। और जब वे इश्माएलियों के एक दल से मिले तो उन्होने अपनी खुशी को दोगुनी करने का निर्णय कर लिया, उन्होने न केवल यूसुफ से छुटकारा पाया बल्कि उसके द्वारा एक फायदा भी कमाया। एक ही दुखद क्षण में, यूसुफ सबसे ज्यादा प्रिय पुत्र और पिता द्वारा बिगाड़े गए पुत्र से, 20 चांदी के सिक्को में बिकने वाला बन गया। उसे अजनबियों द्वारा एक अजनबी देश में दास के रूप में ले जाया गया। परमेश्वर कहा था? क्या हम भी अपनी कठिनाईयों या परेशानियों में परमेश्वर पर शक नही करने लगते है?

बन्दीगृह

जब वह मिस्त्र में एक दास था, तो यूसुफ फिरौन के एक अधिकारी पोतीपर का एक विशेष (निजी) दास बन गया। वह आशीषित हुआ और उसके घराने का एक निरीक्षक बन गया। उसने परमेश्वर और मनुष्य दोनो के सामने सम्मान और ईमानदारी से जीवन बिताया, तौभी उसकी पीड़ा का समय समाप्त नही हुआ था। पोतीपर की पत्नी ने उसे व्यविचार के लिए उकसाया, परन्तु जब वह सफल न हो सकी तो उसने उस पर बलात्कार का झूठा आरोप लगा दिया।

यूसुफ को जान से मारने के बजाय पोतीपर ने उसे बंन्दीगृह में भेज दिया। दूसरी बार धोखा मिलने के बावजूद भी यूसुफ से अपने आपको परमेश्वर के अधीन ही रखा।

जब वह बन्दीगृह में था, तो यूसुफ को दरोगा (जेलर) द्वारा राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे के मुख्यो (प्रधानो) की देखभाल की जिम्मेदारी मिली। एक रात दोनो ने ही स्वप्न देखे और यूसुफ ने उन्हे उसका अर्थ बता दिया। पिलानेहारे को फिर से उसके पद पर राजा के सम्मुख पुर्नस्थापित कर दिया गया परन्तु पकानेहारे को पेड़ पर लटका दिया गया अर्थात् मार दिया गया। यूसुफ ने पिलानेहारे से कहा कि वह फिरौन के सामने उसे स्मरण करे, परन्तु वह भूल गया। एक बार फिर से यूसुफ को भूला दिया गया। 2 वर्षो के लिए फिरौन का पिलानेहारा यूसुफ को भूल गया। उसके बाद परमेश्वर ने फिरौन को एक परेशान करने वाला स्वप्न दिखाया। जब वह उठा तो वह जान गया कि यह कोई साधारण स्वप्न नही है। परन्तु उसके ज्योतिषी तथा जादूगर भी उसके स्वप्न का अर्थ नही बता सके। तब पिलानेहारे को यूसुफ की याद आई। परमेश्वर के सही समय पर, वह यूसुफ को बन्दीगृह में से बाहर लाया और उसे फिरौन के सामने खड़ा कर दिया। यूसुफ ने स्वंय की महिमा करने या लेने से इंकार कर दिया, "मैं तो कुछ नही जानता; परमेश्वर ही फिरौन के लिए शुभ वचन देगा"। (उत्पत्ति 41:15–16)

स्वप्नो के अर्थ ने इस बात को प्रगट किया कि परमेश्वर ने अपनी करूणा के कारण यह प्रगट किया है कि वह मिस्त्र देश के साथ क्या करने जा रहा है। सात वर्षो की बहुतायत और सात वर्षो का अकाल होगा। एक अन्यजाति का राजा होने के बावजूद भी फिरौन इस बात को पहचान गया कि यूसुफ के अन्दर परमेश्वर का आत्मा वास करता है, "परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है कि तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान नही; इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी प्रजा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय में मैं तुझसे बड़ा ठहरूँगा" (उत्पत्ति 41:39–40)। परमेश्वर यूसुफ को इसी जिम्मेदारी के पद के लिए तैयार कर रहा था। वह केवल 30 वर्ष का था परन्तु जो कुछ उसने सहा और दुःख उठाया, उसके द्वारा वह बहुत कुछ सीख चुका था।

पुनर्स्थापना

अध्याय 42–45 में, यूसुफ को अपने परिवार से फिर से मिलने के लिए इस्तेमाल किया गया। अकाल बहुत दूर–दूर तक फैल चुका था यहां तक कि कनान देश में भी। यूसुफ के भाईयों ने सुना कि मिस्त्र देश में अनाज (भोजन) है, तो अपने परिवार और खुद को भूखमरी से बचाने के लिए वे मिस्त्र देश को गए। उन्होने अपने आपको मुंह के बल गिरा हुआ और यूसुफ, जो उनका भाई था, उसे जाने बिना उसके सामने झुका हुआ पाया। यूसुफ अपने जीवन की सबसे बड़ी

पीड़ा के बिल्कुल सामने खड़ा था तथा उसी समय उन स्वप्नों की यादो से उसका मन उमड़ने लगा।

यह देखने के लिए कि क्या परमेश्वर ने उनके हृदयो में कार्य किया है और क्या उन्हे पश्चाताप् का आत्मा मिला है, यूसुफ ने बिन्यामीन के लिए उनके प्रेम को परखा। यहूदा अपने आपको दास बनाने के लिए तैयार था ताकि बिन्यामीन को उसके पिता के पास वापस भेज सके। उसने अपने पिता के लिए दया की भीख मांगी जो कि यूसुफ के चले जाने के बाद से ही दुःख से नही उभर पाया था तथा उसका जीवन उसके बाद पहले जैसा नही रहा था (44:18–34)।

इस विशेष समय की भविष्यवाणी परमेश्वर ने अब्राहम से उत्पत्ति 15:13 में पहले ही कर दी थी, "यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे और उस देश के लोगो के दास हो जाएँगे और वे उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे।" यूसुफ की सेवा ने इस्त्राएल (याकूब) तथा उसके पुत्रो के लिए मिस्त्र में आने के लिए द्वार खोला, जहां वे चार सौ वर्षो तक रहे और यहां पर वे जनसंख्या में बढ़कर लाखो लोगो की एक जाति (देश) बन गए। मिस्त्र में आने से उन्हे समय, आपूर्ति तथा अवसर मिला कि वे संख्या में बढ़ जाएं। इसके साथ ही, मिस्त्र के अंदर सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक रूप से भ्रष्ट होने का खतरा बाहर के प्रभावो से बहुत कम था। इसके साथ–साथ, इस्त्राएल को मिस्त्र की शिक्षा, संस्कृति तथा सभ्यता की आवश्यकता थी ताकि वे परमेश्वर की व्यवस्था और प्रकाशनो को लिखकर सुरक्षित रख सके।

फिरौन ने यूसुफ को सबसे ऊँचे पद पर बैठाया तौभी वह दीन बना रहा। उसकी केवल एक ही पत्नी और दो पुत्र थे। उसने पहले पुत्र का नाम मनश्शे रखा जिसका अर्थ है "भुलानेवाला" जिसने उसकी पिछली पीड़ाओं को भुलवा दिया। दूसरे पुत्र का नाम एप्रैम "फलवन्त या उत्यंत उपजाऊ" था। क्योकि परमेश्वर की आशीष उसके ऊपर उण्डेली गई थी। यूसुफ के दोनो पुत्रो को याकूब ने गोद ले लिया ताकि वे भविष्य के इस्त्राएल के गोत्रो के भाग हो सके (41:50; 48:5)। अब्राहम, इसहाक और याकूब से किए परमेश्वर के वायदे अब याकूब से अगली पीढ़ी पर आ गए। हमें भी जिम्मेदार और विश्वासयोग्य बनने की जरूरत है ताकि हम परमेश्वर के उद्देश्यो और आशीषो को हमारे परिवारो में भी पहुंचा सके या स्थानंतरित कर सके।

यूसुफ के जीवन के सभी प्रशंसनीय गुणो में से एक गुण जिसमें हम सभी बहुत ज्यादा संघर्ष करते है वो यह है कि उसने अपनी पीड़ाओं के ऊपर विजय प्राप्त करी। वह कड़वा या निरूत्साही नही हुआ तथा स्वंय को दयनीय स्थिति के साथ नही डुबाया। यहां पर हम यूसुफ के हृदय में परमेश्वर के कार्य को देखते है। उसने परमेश्वर को अनुमति दी कि वह उसे मजबूत बनाएं। परमेश्वर के विषय में बहुत सी बाते वह अपने जवानी के दिनो से जानता होगा तथा शायद

उन्ही बाते ने उसके जवानी के अनुभवो में कार्य किया जब वह बुद्धि और डीलडौल में बढ़ रहा था। नया नियम में इसी का प्रतिरूप कुलुस्सियों 1:27 में दिया गया है, "मसीह जो तुम में रहता है," जब मसीह हमारे द्वारा रहता है तो लोग हमारे जीवनो पर जरूर ध्यान देंगे। परमेश्वर की सामर्थ एक जीवन और परिवार को ऐसे बदलती है कि वे आशीष पाएं और उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाएं। जैसा कि मूसा ने याकूब के पुत्रो से व्यवस्थाविवरण 30:19–20 में कहा था, "मैने जीवन और मरण को तुम्हारे सामने रखा है..... जीवनो को चुनो..... और अपने जीवन भर यहोवा को थामे रहो"। जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते है और उसकी आज्ञाकारिता में ही चुनावो को करते है तो हम आत्मिक आशीषो से आशीषित होगे। हमें परमेश्वर के साथ संबंध (रिश्ता) बनाए रखने के लिए चुना गया है ताकि हम इस पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधित्व कर सके और यह बात हमारे जीवन में उद्देश्य और अर्थ को लेकर आती है।

यूसुफः अध्याय एक

पहला दिन

उत्पत्ति 37:1–11, यूसुफ के स्वप्नो के विषय में पढ़े।

1. यूसुफ कितने वर्ष का था तथा उसका क्या कार्य था?
2. वो "बुराईयों का समाचार" क्या था जो यूसुफ अपने भाईयों के विषय में पिता को बताता था? आप क्या सोचते है इसके बारे में।
3. याकूब ने यह कैसे दिखाया कि वह यूसुफ से उसके बाकी पुत्रो से बढ़कर प्रेम करता है?
4. क्या आपने इस प्रकार के पक्षपात को परिवारो में होता हुआ देखा है? इससे क्या दुःख पहुंचता है तथा क्या समस्याएं होती है?
5. यूसुफ के स्वप्नों का वर्णन करो।
6. यूसुफ के भाईयों ने उसके स्वप्नों पर क्या प्रतिक्रिया दी? और याकूब की क्या प्रतिक्रिया थी?

दूसरा दिन

उत्पत्ति 37:12–26 यूसुफ पीड़ा उठाता है।

1. याकूब ने यूसुफ को क्या करने को कहा?
2. यूसुफ के भाईयों ने उसके लिए क्या योजना (षड्यंत्र) बनाई?
3. कौनसा भाई यूसुफ के लिए खड़ा हुआ? और क्यो?
4. यूसुफ की भावनाओं, प्रश्नो और दुःखो का वर्णन करे? (उत्पत्ति 42:21–22)
5. यूसुफ की गड्डे के अंदर की पीड़ा, यीशु की क्रूस की पीड़ा के समान कैसे थी? (देखे यूहन्ना 19:23–24)
6. कितने चांदी के सिक्को के लिए यीशु और यूसुफ को बेचा गया था? (देखे मत्ती 26:15–16)
7. यूसुफ के इस कठिन समय में परमेश्वर उसके लिए क्या कर रहे थे? आप क्या सोचते है?

तीसरा दिन

पढ़े उत्पत्ति 39:1–23, दास के रूप में यूसुफ।

1. यूसुफ को कहां ले जाया गया और उसे किसने खरीदा?
2. जब पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को पाप करने के लिए उकसाया तो उसने क्या किया?
3. बन्दीगृह में यूसुफ के पद का वर्णन करे।
4. इस अध्याय में यह कितनी बार कहा गया है कि, "परमेश्वर (यहोवा) यूसुफ के संग था"?
5. क्या आप परमेश्वर को अपने जीवन में देखते है?
6. क्या आज आप किसी से यह बात बांटना तथा उसे उत्साहित करना चाहेंगे?

चौथा दिन

पढ़े उत्पत्ति अध्याय 40 बन्दीगृह में यूसुफ।

1. पिलानेहारे तथा पकानेहारे के स्वप्नों का वर्णन करे तथा यूसुफ ने इन स्वप्नो का अर्थ कैसे बताया?
2. कौनसी आयत बताती है कि यूसुफ ने अपना ध्यान परमेश्वर की ओर मोड़ा?
3. कौनसी आयत दिखाती है कि यूसुफ सबसे ज्यादा निराश था?
4. यूसुफ के जीवन से आप परमेश्वर के विषय में क्या सीखते है जिसे कि आप अपने खुद के जीवन में लागू करना चाहेगे?

पाँचवा दिन

पढ़े उत्पत्ति अध्याय 41 यूसुफ एक जाति (राष्ट्र) को बचाता है।

1. यूसुफ को बन्दीगृह में कितने वर्ष बीत चुके थे?
2. फिरौन के स्वप्नो का क्या अर्थ था, वर्णन करे।
3. यूसुफ ने कैसे सारी महिमा लेने से इंकार कर दिया और उसे परमेश्वर की ओर मोड़ दिया?
4. सारे मिस्त्र का नेतृत्व किसे सौंप दिया गया।
5. मिस्त्र को अकाल से बचाने के लिए यूसुफ ने कैसी योजना बनाई?
6. यूसुफ ने अपने पुत्रो के क्या नाम रखे और यह उसके बारे में क्या प्रगट करता है?

परमेश्वर कठिन परिस्थितियों का इस्तेमाल हमारे जीवन में चरित्र निर्माण के लिए करता है।

यूसुफः अध्याय दो

पहला दिन

पढ़े उत्पत्ति 42–43

1. अनाज लेने के लिए भाई कहाँ गए थे?
2. जब यूसुफ के भाई उसके सामने झुक गए तो यूसुफ को क्या याद आया?
3. यूसुफ ने ऐसा क्यो दिखाया कि वह अपने भाईयों को नही जानता है?
4. आप क्या सोचते है कि क्यो यूसुफ के भाई उसे पहचान नही पाए?
5. कौनसी आयत दिखाती है कि उसके भाईयो ने यूसुफ के साथ किए गए दुर्व्यवहार को एक पाप के रूप में पहचान लिया?
6. जब यूसुफ के भाई घर अपने पिता याकूब के पास वापस आए तो उन्होने किस समस्या का सामना किया?

दूसरा दिन

पढ़े उत्पत्ति अध्याय 44–45

1. याकूब के दुःख और भय ने उसके परिवार को मिस्त्र से अनाज लाने से कैसे रोका?
2. यहूदा के कौनसे शब्द (वचन) थे, जिनको सुनकर यूसुफ रोने लगा?
3. जब यूसुफ ने अपने भाईयो को बताया कि वह कौन है तो उसके बाद उसने क्या किया जो कि हमें भी करना चाहिए?
4. यूसुफ को अपने भाईयो को माफ करने के योग्य किसने बनाया?
5. क्या कोई ऐसा है जिसे आपको माफ करने की आवश्यकता है?
6. अपने भाईयों के लिए यूसुफ ने किस प्रकार का स्वागत् किया?
7. अध्याय 45:8 के अनुसार, वास्तव में यूसुफ को मिस्त्र में किसने भेजा था?

तीसरा दिन

उत्पत्ति अध्याय 46 पढ़े

1. परमेश्वर ने याकूब को आगे बढ़ने के लिए कौनसी आज्ञा और वायदा दिया?
2. मिस्त्र में कुल कितने लोग गए थे (आयत 27)?
3. मिस्त्र में किस स्थान पर जाकर याकूब का परिवार रहने लगा?
4. मिस्त्र के लोग चरवाहो के विषय में क्या सोचते थे?

चौथा दिन

उत्पत्ति अध्याय 47 पढ़े

1. फिरौन ने यूसुफ के परिवार के प्रति किस प्रकार सम्मान दिखाया?
2. याकूब ने मिस्त्र में कितने वर्षो तक जीवित रहकर अपने अंतिम वर्षो का आनन्द उठाया?
3. याकूब कहाँ चाहता था कि उसे दफनाया जाएं और क्यो?
4. क्या आप विश्वास करते है कि याकूब स्वंय अपने साथ, अपने पुत्रो के साथ तथा परमेश्वर के साथ शांति और मेलमिलाप में था?

पाँचवा दिन

उत्पत्ति 49:29–33 और उत्पत्ति 50 पढे।

1. क्या आपको लगता है कि याकूब मृत्यु से डरा हुआ था?
2. यूसुफ ने अपने पिता की अन्तिम इच्छाओं का कैसे सम्मान किया?
3. फिरौन ने यूसुफ के पिता का आदर कैसे किया?
4. भाईयों ने उनके पिता का आदर कैसे किया तथा कैसे अपना भरोसा या विश्वास परमेश्वर पर दिखाया?
5. भाईयों द्वारा कौनसी विनती थी जिसने यूसुफ को आंसुओं से भर दिया? और क्यो?
6. यूसुफ का उत्तर किस प्रकार हमे उत्तर देता है जब हम परमेश्वर के मार्गो को समझ नही पाते है?

दर्द के द्वारा परमेश्वर की योजना का एक महान् उद्देश्य होता है।

यूसुफ और यीशु

जब हम क्रूस और पुनरूत्थान को याद करते है तो यह बात बुद्धिमानी की बात होगी कि इसकी कुछ समानताओं की इस व्यक्ति यूसुफ, जिसमें कि परमेश्वर का आत्मा वास करता था (उत्पत्ति 41:38) और यीशु, जो हमारा छुड़ानेवाला है, के बीच में तुलना करे। ये बाते सीधे पवित्रशास्त्र में से ली गई है।

1. पिता उनसे बहुत प्रेम करता थाः यूसुफ (उत्पत्ति 37:3); यीशु (मत्ती 3:17)
2. पिता की भेड़ो के चरवाहेः यूसुफ (उत्पत्ति 37:2); यीशु (यूहन्ना 10:11, 27–29)
3. पिता द्वारा भाईयों के पास भेजे गएः यूसुफ (उत्पत्ति 37:13–14); यीशु (इब्रानियों 2:11)
4. भाईयों द्वारा नफरत/घृणा करी गईः यूसुफ (उत्पत्ति 37:4); यीशु 7:4–5
5. दूसरो ने उन्हे हानि पहुंचाने के लिए षड्यंत्र रचाः यूसुफ (उत्पत्ति 37:20); यीशु (यूहन्ना 11:53)
6. परीक्षा हुईः यूसुफ (उत्पत्ति 39:7); यीशु (मत्ती 4:1; इब्रानियों 4:15)
7. मिस्त्र ले जाया गयाः यूसुफ (उत्पत्ति 37:26); यीशु (मत्ती 2:14, 15)
8. उनके कपड़ो को छीन लिया गयाः यूसुफ (उत्पत्ति 37:23); यीशु (यूहन्ना 19:23,24)
9. एक दास के दाम के लिए बेच दिया गयाः यूसुफ (उत्पत्ति 37:28); यीशु (मत्ती 26:15)
10. जंजीरो में जकड़ाः यूसुफ (उत्पत्ति 39:20); यीशु (मत्ती 27:2)
11. गलत आरोप लगाए गएः यूसुफ (उत्पत्ति 39:16–18); यीशु (मत्ती 26:59, 60)
12. दो अन्य कैदियो के साथ रखा गया, जिसमें से एक बच गया दूसरा नाश हो गयाः यूसुफ (उत्पत्ति 40:2–3); यीशु (लूका 23:32)
13. दोनो ही अपनी सार्वजनिक पहचान को पाते समय 30 वर्ष की उम्र के थेः यूसुफ (उत्पत्ति 41:46); यीशु (लूका 3:23)
14. पीड़ा के बाद उन्हे उठाया गया.... लोगो ने उनके सामने घुटने टेकेः यूसुफ (उत्पत्ति 41:41); यीशु (फिलिप्पियों 2:9–11)
15. जिन्होने उनके साथ बुरा किया, उन्हे माफ कर दियाः यूसुफ (उत्पत्ति 45:1–15); (लूका 23:24)
16. अपनी जातियों (देशो) को बचायाः यूसुफ (उत्पत्ति 45:7); यीशु (मत्ती 1:21)
17. परमेश्वर ने उन बातो को भलाई में बदल दिया जो लोगो ने उनकी हानि के लिए सोची थी। यूसुफ (उत्पत्ति 50:20); यीशु (1कुरिन्थियों 2:7–10)
18. भूखो को रोटी खिलाईः यूसुफ (उत्पत्ति 41:55–56); यीशु (यूहन्ना 6:1–15; 35)

ध्यान दे

कुछ विद्वान इस तथ्य पर विश्वास करते है कि जिस प्रकार यूसुफ ने एक मिस्त्री स्त्री से विवाह किया, यह भविष्य की वह "पूर्वछाया" के समान है जब यीशु चुने हुए अन्यजातियों को अपने पास लाया तथा उन्हे अब्राहम की वंशावली में जोड़ दिया।

यूसुफ
सौभाग्यशाली– गड्डा –दर्द–निवेदन– भले के लिए योजना– हानि नही बल्कि चंगा करने की योजना– पूर्ति करने के लिए पद मिलना वायदा पूरा किया– आशीष के साथ उसे दूसरो को देना।

बाईबिल के महापुरूष

मूसा

पद्यांश– निर्गमन

मुख्य वचनः निर्गमन 33:11, "और यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने–सामने बाते करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बाते करे।"

सिद्धांत– सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए एक योजना है। वह घटनाओं को रचता है कि वह उस योजना को खोजने में हमारी मदद कर सके।

संभवतः– मूसा सबसे महान् अगुवा है जो इस पृथ्वी पर पैदा हुआ। वह प्रार्थना करने वाला, दीन तथा साहसी व्यक्ति था। सभी कठिनाईयो, दुर्व्यव्हार, तकलीफ और विद्रोह के बावजूद वह आगे बढ़ता गया।

उसका जन्म एक पुस्तक की कहानी की तरह था, इब्री परिवार में उसका जन्म हुआ जिन्होने उसे फिरौन से छिपाकर रखा क्योकि वह सभी पैदा होने वाले यहूदी बालको (पुत्रो) को मार रहा था। इस्त्राएल की बढ़ती हुई आबादी को नियंत्रित करने का यह तरीका या योजना राजा की थी (इस्त्राएली परमेश्वर के चुने हुए लोग थे)। छोटी मरियम जो कि मूसा की बहिन थी, वह उस टोकरी को देख रही थी जिसमें बालक मूसा को रखकर, उसकी माता ने परमेश्वर के भरोसे पर पानी (नील नदी) में छोड़ दिया था। फिरौन की पुत्री, जो उस सुबह नहा रही थी, उसे वह टोकरी मिलती है और वह मूसा का अपना पुत्र बना लेती है। मरियम को एक नर्स (धाई) को ढूंढने के लिए भेजा जाता है और इस प्रकार से उसकी खुद की माता द्वारा उसकी देखभाल और रक्षा तब तक करी जाती है जब तक कि वह बढ़ा होकर महल में रहने और सीखने (अध्ययन) के लिए नही आता।

यह सब एक महान् योजना का ही एक भाग होता है और जब मूसा बड़ा हो जाता है तो उसे पता चलता है कि वह स्वंय भी एक इब्री है। वह अपने लोगो द्वारा सही जाने वाली पीड़ाओं को देखता है और उनके बीच में आकर एक क्रूर काम करानेवाले को मार डालता है क्योकि वह एक इब्री दास को मार रहा होता है। जीवन का भय उसे जंगल में भागने पर विवश कर देता है। इब्रानियों 11:24 कहता है, "विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इंकार कर दिया इसलिए कि अपने लोगो के साथ दुःख भोगना उसे अधिक उत्तम लगा"। परमेश्वर के पीछे चलने का चुनाव आज भी संसार के कई भागो में हमेशा आसान नही होता है।

आइए हम उस अगुवाई की तैयारी का अवलोकन करे जिसमे से मूसा को होकर गुज़रना पड़ा ताकि वह इब्री जाति के लोगो को मिस्त्र की (गुलामी) दासत्व में से छुड़ा सके। 40 वर्षो तक फिरौन के महल में वह पला–बड़ा, वह मिस्त्रयों की सभी शिक्षाओं और बुद्धि की बातो में प्रशिक्षित किया गया। उसके बाद परमेश्वर उसे मिस्त्र की गतिविधियों और शोर से बाहर ले गया और 40 वर्षो के लिए उसे खुले जंगल के शांत स्थान में रख दिया। जहां वह भेड़ो को चराता तथा परमेश्वर के साथ मनन (ध्यान) में समय बिताता था। यहां पर मूसा ने अपने इब्री (यहूदी) होने के बारे में सिखा। इब्री लोग अब्राहम में से निकलकर अब एक बड़ी जाति बन गए थे। वे परमेश्वर के छुटकारे के देश और आशीषो के वायदो को थामें हुए थे। जैसा कि उत्पत्ति 12:2 और 15:13–14 में बताया गया है। वे एक ऐसे देश में सताएं जा रहे थे, जो उनका नही था तथा वे छुटकारा पाना चाहते थे। मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊँगा। यूसुफ याकूब तथा उसके पूरे परिवार को मिस्त्र में लेकर आया था। वे कुल 70 लोग थे जो अब एक बड़ी जाति बन चुके थे (20 लाख से भी ज्यादा)। परमेश्वर उन्हे दासत्त से छुड़ाकर वायदे के देश में ले जाएंगा। वायदो के साथ ही परमेश्वर के पास एक योजना भी थी, जैसा कि आज भी वह अपनी संतानों के लिए करता है। मूसा को एक आगामी बड़े कार्य के लिए तैयार किया जा रहा था। मूसा वह व्यक्ति था जो एक विजय पाने वाली सम्मानीय इच्छा को बड़े ही नाटकीय ढंग से सीखेगा उसको यह बात परमेश्वर से मुलाकात के दौरान सीखाई जाएगी। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर से आमने–सामने मिला।

परमेश्वर ने मूसा के लिए यह यात्रा उस दिन शुरू करी जब वह एक दिन अपनी भेड़ो को चरा रहा था। वह एक जलती झाड़ी में उसके सामाने प्रगट हुआ और उससे बात करी तथा अपने आपको मूसा के सामने एक आग (आग– परमेश्वर की उपस्थिति में पवित्रता का एक चिह्न है) के रूप में प्रगट किया। परमेश्वर स्वंय पवित्र तथा शुद्ध है। पवित्रता परमेश्वर की उपस्थिति से आती है। मसीह जीवन में पवित्रता पवित्र आत्मा के वास करने, भरने संतुष्ट करने तथा एकमन होने से आती है जब एक विश्वासी अपनी इच्छाओं को परमेश्वर के सामने समर्पित कर देता है। हमें जलती हुई झाड़ियों अर्थात् परमेश्वर की उपस्थिति में बुलाया गया है ताकि हम संसार में से निकले हुए वो लोग हो सके जिनके अंदर सुन्दर बनाने वाली परमेश्वर की आग वास करती है। जो लोग परमेश्वर से मिले, या जिनकी मुलाकात/सामना परमेश्वर से हुआ है, उसने उनके अंदर एक शुद्धता का ह्रदय और शुद्ध मन दिया तथा उन्होने दूसरो के सामने भी एक पवित्र जीवन जिया है।

जलती झाड़ी में परमेश्वर अपने आपको, अपने वायदो को तथा अपने उद्देश्यो को मूसा के सामने प्रगट करता है जिसे एक बहुत ही कठिन कार्य अर्थात् इब्रियो को मिस्त्र की गुलामी (दासत्व) से छुड़ाने के लिए चुना गया था। मूसा भय और सम्मान के साथ परमेश्वर के सामने घुटने

टेकता है जब वह उससे बात करता है। वह परमेश्वर से व्यक्तिगत तौर पर मिला। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप में से हर एक को सर्वशक्तिमान परमेश्वर का एक अनुभव मिले जो कि जलती झाड़ी के समान आपके लिए सच्चा हो जैसा कि मूसा के लिए था। मैं निश्चित हूँ कि मूसा अपने संदेह और कठिन समयो के दिनो में, जरूर इस दिन की ओर वापस मुड़ता होगा जब उसका सामना जीवित और सर्वशक्तिमान परमेश्वर से हुआ था। हम परमेश्वर को तब तक नही समझ सकते है जब तक कि हम उसके सामने स्वंय को असहाय तथा त्यागे हुए के समान न लाएं। क्योकि वह अकेला ही हमारे लिए पर्याप्त है। आज परमेश्वर की उपस्थिति हमारे लिए एक सौभाग्य की बात है जो पवित्र आत्मा द्वारा, जो हमारे अंदर है, मिलती है विशेषकर जब हम परमेश्वर के पवित्र वचन को पढ़ते हुए परमेश्वर से मुलाकात करते है।

एक क्रूर तानाशाह फिरौन के हाथो (पकड़) से एक जाति को छुड़ाना मूसा को अपने लिए एक उपयुक्त कार्य नही लगा अर्थात् उसने अपने आपको इसके योग्य नही समझा। वह परमेश्वर के सामने बहुत से बहाने बनाता है। यह परमेश्वर को अच्छा नही लगता। वह अच्छे से बोल नही सकता। क्या उसका भाई हारून यह कार्य नही कर सकता? हम जानते है कि परमेश्वर मूसा को जानता है। उसने उसे तथा उसकी जीभ को भी बनाया था। परन्तु क्या ऐसा ही कुछ हमारे साथ भी नही है? परमेश्वर ने आपको क्या करने को कहा है? क्या आप सुनने को तैयार है और आज्ञा मानने को भी, और कोई भी बहाना न बनाए कि आप क्यो उसकी इच्छा को पूरी नही कर सकते? आपको एक ऐसा यंत्र/माध्यम होना होगा जिसको परमेश्वर इस्तेमाल कर सके साथ ही वह अपने कार्यो को इस पृथ्वी पर पूरा करने के लिए उपलब्ध लोगो को चाहता है न कि सिद्ध लोगो को।

हम छह (6) भविष्यवाणियों में परमेश्वर के हाथ और निर्देशन को देखते है जो अब्राहम को दी गई तथा जिसके बारे में चार पुस्तको निर्गमन, लैव्यवयवस्था, गिनती तथा व्यवस्थाविवरण और यहां तक कि इससे आगे भी लिखा हुआ है। इब्री (यहूदी लोग) लोग एक देश में परदेशी होकर रहेंगे (उत्पत्ति 15:13)। वे उनके दास होगे। वे मिस्त्र में दासो के रूप में नही गए थे परन्तु मिस्त्र में एक नया राजा गद्दी पर बैठा जो यूसुफ को नही जानता था (निर्गमन 1:8)। इस राजा ने उन्हे दबाना और सताना शुरू किया क्योकि वह उनकी बढ़ती हुई जनसंख्या से डर गया था। चार सौ वर्षो तक उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। मिस्त्रियों ने उन्हे जबरन मेहनत करवाकर दबाया तभा भण्डारवाले नगरो को फिरौन के लिए बनवाया। जितना उन्होने इब्रियों को दबाया या सताया, वे उतना ही बढ़ते चले गए। कठिन परिश्रम के कारण उनके जीवन कड़वाहट से भर गए थे। यह दबाव इतना बढ़ाया गया कि उन इब्रियों के पैदा होने वाले नर बालक को जन्म लेते ही मार डालने की आज्ञा दे दी गई। उस देश को मैं दण्ड दूंगा (उत्पत्ति 15:14)। जिसकी शुरूआत उस देश के ऊपर आई दस विपत्तियों से हुई, जिसमें से प्रत्येक काफी

विनाशकारी थी। इस्त्राएली एक महान छुटकारे को देखेंगे तथा बहुत सारे धन के साथ वहां से निकलेंगे (उत्पत्ति 15:14)। निर्गमन का बारहवाँ अध्याय बताता है कि इस्त्राएली किस प्रकार उस फसह की रात को निकले जब यहोवा से सभी मिस्त्रियों के पहिलौठो को मार डाला था। परमेश्वर यहोवा इस्त्राएलियों के घरो से होकर गुज़र गया जिनकी चौखटो पर मेम्नो का लहू लगाया हुआ था। फसह उस पूर्वछाया को दिखाता है कि कैसे परमेश्वर ने हमें भी यीशु मसीह के लहू द्वारा पाप की गुलामी (दासत्ता) से छुड़ाया है (1कुरिन्थियों 5:7)। चौथी पीढ़ी में वे कनान देश में वापस लौटेंगे। मूसा की कहानी इसी बात से संबंधित है कि यह सब कैसे हुआ। यह कोई आसान या तेज़ वापसी नही थी। यहां तक कि मूसा को भी यरदन पार करके कनान में प्रवेश करने की अनुमति नही दी गई बल्कि मूसा निबो पर्व पर मर गया। यह परमेश्वर के अनुग्रह और मूसा की विश्वासयोग्य अगुवाई की कहानी है जो उसने आज्ञाकारिता के साथ पूरी करी।

हम में से अधिकत्तर के अन्दर कुछ नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ होती है, हमारे घरो में, काम के स्थान या कलीसिया में। हम परमेश्वर पर मूसा की निर्भरता से सीख सकते है कि निराशा के क्षेत्रो तथा कठिन लोगो के साथ काम करने के दौरान हम परमेश्वर पर भरोसा रखें। उसने परमेश्वर की सुनी तथा लोगो को अपने साथ बाहर लेकर आया ताकि उनका भार उठा सके। परमेश्वर हमें भी सिखाने को तैयार है जैसा उसने मूसा के साथ किया जब हम अपने आपको उसके अधीन करके उसके निर्देश को सुनते है। हम बाईबिल में उल्लेखित लोगो के समान ही जीवन में कुछ अनुभवो से होकर गुज़रते है। जब हम परमेश्वर के वचन में बने रहते है तो पवित्र आत्मा हमें उन आवश्वयकताओं के क्षेत्रो को हमें बताता है।

निर्गमन अध्याय 33 में, परमेश्वर मूसा के आगे जाने के लिए एक दूत को भेजा चाहता था, परन्तु मूसा ने अगुवाई करने से इंकार कर दिया जब तक कि स्वंय परमेश्वर उनके साथ नही चलेगा। उन्हे परमेश्वर के द्वारा ही अगुवाई की जानी चाहिए नही तो कोई अगुवाई ही न करे। मूसा परमेश्वर से तम्बू में मिलने जाता था जब तक कि मिलापवाला तम्बू नही बनाया गया। "जब मूसा उस तम्बू में प्रवेश करता था, तब बादल का खंभा उतर के तम्बू के द्वार पर ठहर जाता था। और यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने–सामने बाते करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बाते करे।" निर्गमन 33:9–11

परमेश्वर अपने लोगो के साथ हमेशा रहने की इच्छा करता है, जिन्हे उसने बनाया। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में हम उसे उपस्थित पाते है। सबसे पहले वाटिका में, शाम के ठण्डे समय में आदम और हव्वा के साथ चलते हुआ और अब निर्गमन में बादल और आग के खम्बे के रूप में उनकी रक्षा और मार्गदर्शन करते हुए। तम्बू तथा मिलापवाला तम्बू वे स्थान थे जहां मूसा यहोवा से मिलता तथा लोगो के लिए मध्यस्ता करता था। वाचा का संदूक तथा मंदिर को बाद में बनाया

गया जोकि परमेश्वर की उपस्थिति के चिह्न थे। और जब हम नया नियम में आते है तो हम सीखते है कि हम जीवित परमेश्वर के मंदिर है, 1कुरिन्थियो 6:19 कहता है, "हम जीवित परमेश्वर के मंदिर है"; जैसा परमेश्वर ने कहा, मैं "मैं उनके मध्य में अपना डेरा डालूँगा और उनके बीच में चला–फिरा करूँगा और मैं उनका परमेश्वर हूँगा।" जब मूसा परमेश्वर की उपस्थिति में रहता था तो उसका चेहरा चमकने लगता था। इस बात को हम पौलुस द्वारा लिखित 2कुरिन्थियो 3:16–18 में भी पाते है, जब एक व्यक्ति प्रभु की ओर मुड़ता है तो पर्दा हटा दिया जाता है और हम परमेश्वर की महिमा को देखते है तथा उसकी उपस्थिति से बदल जाते है। हम दूसरो के सामने–चमकने लगते है। यीशु के साथ होने की यही सुंदरता है कि वह हमारे जीवनो को बदल देता है और हम दूसरो के सामने ऐसे जीने लगते है जैसे यीशु रहता हो। यह एक बहुत ही सुन्दर दृश्य है जिसमें हम अपने प्रतिदिन के जीवन को देख सकते है जैसे कि उसकी उपस्थिति की ज्योति हमारे अंदर रहती है।

मूसा परमेश्वर का नबी (भविष्यद्वक्ता) था, तथा उसे परमेश्वर ने इसलिए चुना था कि वह अपने लोगो को बंधुआई, दर्द और पीड़ा के बंधनो से मुक्ति दिलाए। तथा पूरी जाति को आज़ाद करे। उसे सौभाग्य मिला कि वह चिह्न और चमत्कारो के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ और महिमा को दिखाए जैसे लाल समुद्र को दो भाग करना, चट्टान पर मारकर पानी निकालना आदि। सीनै पर्वत पर गरजते हुए पहाड़ो के मध्य में से व्यवस्था की तख्तियों को विश्वासहीन लोगो के लिए लाना। परमेश्वर ने उसे बुलाया था, यही उसकी सेवा (मिशन) थी कि परमेश्वर के लोगो की परमेश्वर के वायदे के देश में अगुवाई करे। उसका जीवन उस वायदे के देश की ओर एक यात्रा के समान था, आशा से भरी यात्रा, जिसमें निराशा, थकावट, हताशा, कुड़कुड़ाना, विश्वास हीनता हमेंशा उसके चारो ओर थी। केवल एक ही बात ने उसे आगे बढ़ने और उस कार्य को करने में और विश्वासयोग्य रहने में मदद करी, वो था– परमेश्वर के वचन का वायदा और आशा। उसके पास आशा थी और उसने विश्वास किया। उसके पिता अब्राहम के समान ही उसके पास एक देश था। इब्रानियों 11:13–16 कहता है, "ये सब विश्वास ही की दशा में मरे और उन्होने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नही पाई पर उन्हे दूर से देखकर आनन्दित हुए क्योकि वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी थे"।

हम भी एक यात्रा में है, परमेश्वर की महिमा के लिए हमारे पास इस धरती पर एक बुलाहट, और एक उद्देश्य है। हमें सही रीति से इसे समाप्त करना जरूरी क्योकि हम उस वायदे के देश के लिए बंधे हुए है जहां पर यीशु रहता है, हमारा स्वर्गीय घर जहां पर हम हमेशा के लिए रहेंगे।

मूसा अध्याय 1

भूमिका

मुख्य वचन– उत्पत्ति 15:1 "मत डर; तेरी ढाल और तेरी अत्यंत बड़ा प्रतिफल मैं हूँ"।

पहला दिन– उत्पत्ति 45:4–11, 47:1–6 पढ़े

1. याकूब की संताने और यूसुफ और इस्त्राएली मिस्त्र कैसे पहुंचे?
2. उनका व्यवसाय क्या था? तथा वे कहाँ पर जाकर बसे?
3. अध्याय 46:2–4 में, याकूब को मिस्त्र में जाने जैसे बड़े कदम को उठाने की पुष्टि किसने करी थी?
4. किस प्रकार की सात्वंना का वायदा परमेश्वर ने याकूब को दिया था?

दूसरा दिन– पढ़े उत्पत्ति 12:1–3 और उत्पत्ति 15:13–20

1. आयत 5 और 18 में परमेश्वर ने अब्राहम से उसके वंशजो के भविष्य के बारे में क्या बात प्रगट करी थी?
2. उत्पत्ति 15 से हमें क्या पता चलता है कि कितने वर्षो तक इस्त्राएल जाति को दूसरे देश में पीड़ा उठानी पड़ेगी?
3. इन पंद्याशो से हम परमेश्वर के बारे में क्या सीख सकते है?

तीसरा दिन– पढ़े निर्गमन 1:5–22

1. याकूब की पीढ़ी के कितने लोग मिस्त्र में आए थे कि यूसुफ के साथ सुरक्षित रह सके?
2. नए राजा को किस बात का डर था? तथा उनकी आबादी को कम करने के लिए उसने किस प्रकार की योजना बनाई।
3. धाईयों ने इसका क्या प्रत्युत्तर दिया और उन्हे इसका क्या प्रतिफल मिला?
4. क्या परमेश्वर उन्हे प्रतिफल देता है जो उसका भय मानते और आज्ञाकारी रहते है?

चौथा दिन– पढ़े निर्गमन 1:22–2:1–3

1. इब्रियों को नियंत्रित करने के लिए राजा की दूसरी योजना क्या थी?
2. मूसा की माता ने उसे तीन महीनो तक क्यो छिपा कर रखा? आप क्या सोचते है?
3. इब्री लोग परमेश्वर के बारे में क्या जानते थे? आप क्या सोचते है?
4. इब्रानियों 11:23 मूसा के माता–पिता के विषय में क्या कहती है?

(विश्वास से जीवित रहने का अर्थ है परमेश्वर पर यह विश्वास करना कि वह अपने वायदो को पूरा करेगा)

पाँचवा दिन– पढ़े निर्गमन 2:1–10

1. मूसा की सुरक्षा के लिए क्या चमत्कार हुआ?
2. मूसा को क्या फायदे मिले होंगे जब वह बच्चे के रूप में अपनी माँ द्वारा पाला गया तथा फिरौन की पुत्री द्वारा उसे गोद लिया गया?
3. परमेश्वर के गोद लिए संतान के रूप में आप अपने फायदो की सूची बनाए। (इफिसियों 1:13–14) और परमेश्वर का धन्यवाद करे।

यहां तक कि जब हम इसे देखते भी नही तब भी परमेश्वर अपने लोगो की भलाई के लिए कार्य करता है।

मूसा अध्याय दो

मूसा की बुलाहट

मुख्य वचन– निर्गमन 2:24, "परमेश्वर ने उनकी कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ बांधी थी, स्मरण किया।" यहोवा ने इस्त्राएलियों को देखा और स्मरण किया।

पहला दिन–पढ़े निर्गमन 2:11–22

1. ऐसा क्या हुआ था कि मूसा को डर के कारण महल से दूर जाना पड़ा?
2. परमेश्वर ने मूसा की देखभाल कैसे करी?

पढे निर्गमन 2:23–25

3. इब्री लोगो ने क्या किया, जब मिस्त्र ने उनकी दशा असहनीय हो गई?
4. लोगो द्वारा मदद के लिए चिल्लाने पर परमेश्वर के प्रत्युत्तर की सूची बनाएं।
5. क्या आपको अपने लिए भी परमेश्वर से ऐसे प्रत्युत्तर की जरूरत हे?

दूसरा दिन– पढ़े निर्गमन 3 परमेश्वर मूसा से बात करता है।

1. जलती झाड़ी के स्थान पर क्या हुआ, वर्णन करो?
2. परमेश्वर ने अपने बारे में क्या कहा?
3. परमेश्वर के पास मूसा के लिए जो योजना भी, उसका क्या प्रत्युत्तर मूसा के पास था?
4. आपका प्रत्युत्तर क्या होगा जब परमेश्वर आपकी क्षमताओ से बढ़कर कुछ काम करने को आपको कहे?
5. आयत 12 और 17 में मूसा तथा इस्त्राएल के लिए क्या वायदा है?

तीसरा दिन– पढ़े निर्गमन 4:1–17

1. कौनसा शक्तिशाली प्रदर्शन (चमत्कार) परमेश्वर ने मूसा को दिखाया ताकि वह विश्वास कर सके?
2. मूसा ने परमेश्वर के सामने क्या बहाने बनाएं?
3. पूर्ण रूप से परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी न होने के लिए हम कौनसे बहाने बनाते है?
4. आयत 14 में परमेश्वर के प्रत्युत्तर को देखे।

अपने विश्वास की कमी का अंगीकार करे तथा परमेश्वर को धन्यवाद दे कि उसने आपको उन कार्यो का करने के योग्य बनाया जो वह आपसे करवाना चाहता है।

चौथा दिन– पढ़े निर्गमन 5:1–21

1. मूसा और हारून ने फिरौन से क्या करने को कहा और उसका प्रत्युत्तर क्या था?
2. मूसा ने यहोवा परमेश्वर से कौनसे दो प्रश्न पूछे?
3. लोगो के काम करने की जगह पर चीज़े कैसे और भी ज्यादा बदत्तर (खराब) हो गई?
4. क्या परमेश्वर की आज्ञाकारिता के कारण चीज़े बदत्तर हो सकती है या फिर वैसी जिसकी हम आशा नही करते?

पाँचवा दिन– निर्गमन 5:21–23

1. मूसा कैसा महसूस कर रहा था, आपको क्या लगता है?
2. क्या आपको भी कभी ऐसा ही महसूस हुआ है जब परमेश्वर के प्रति आपकी आज्ञाकारिता के कारण ऐसा लगा कि दूसरो के लिए चीज़े बदत्तर हो गई?
3. अध्याय 6:1 में परमेश्वर क्या कहता है कि वह करेगा?

"अक्सर परमेश्वर पर विश्वास करने में चुनौती, मुश्किल और पीड़ा भी शामिल होती है"।
जो चुनाव हम आज करते है वह उन चुनावो को भी निर्धारित करती है, जो हम कल करेंगे।

मूसा अध्याय 3

विपत्तियाँ

मुख्य वचन– निर्गमन 9:6 "परन्तु सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाए रखा है कि तुझमे अपनी सामर्थ्य दिखाऊँ और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूँ"।

पहला दिन– पढ़े इब्रानियों 11:23–27

1. मूसा के विश्वास से संबंधित उन बातो की सूची बनाओ जिनके लिए मूसा की प्रशंसा की गई है?
2. आप कैसा सोचते है कि बचपन में मूसा की परवरिश, जो कि एक इब्री परिवार में हुई, उसका प्रभाव उस समय भी रहा जब वह बड़ा हो गया?
3. जिस प्रकार मूसा को गोद लिया गया था वैसे ही हम जो विश्वासी है हमें भी गोद लिया गया है, इस बुलाहट में कौनसे अवसर (सौभाग्य) शामिल है? इफिसियों 1:3–14 पढ़े।

दूसरा दिन– पढ़े निर्गमन 6:1–8 विपत्तियों से पहले।

1. परमेश्वर द्वारा इस्त्राएल के लिए कौनसी वाचा दोहराई गई है?
2. परमेश्वर कैसे उन्हे छुड़ाएगा, इस विषय पर उसने क्या कहा?
3. इन आयतो में, मैं करूँगा "(I Will)" जो परमेश्वर यहोवा द्वारा कहा गया है, उनकी सूची बनाओ।
4. परमेश्वर ने आपके जीवन में आपने सामर्थी हाथों को कैसे दिखाया है।

तीसरा दिन– निर्गमन अध्याय 7:10 में विपत्तियों के बारे में पढ़े।

1. आप यहां पर किन गुणो को देखते है तथा परमेश्वर को समझने में यह आपकी कैसे मदद कर सकते हे?

चौथा दिन– निर्गमन 7:14–8:19 तक पढ़े

2. क्या आप ऐसे लोगो को जानते है जो परमेश्वर के साथ खेल खेलते है?
3. क्या आप भी वायदो को करते और फिर बदल जाते है, जब दबाव हट जाए या फिर चीज़े बदल जाए?
4. अध्याय 10:29 में फिरौन के लिए मूसा के अंतिम वचन क्या थे?

पाँचवा दिन– निर्गमन अध्याय 11 पढ़े

1. अंतिम विपत्ति क्या थी?
2. आपके परिवार में पहिलौठा कौन है?

3. परमेश्वर ने कैसे इस्त्राएलियों को मिस्त्रियों की नज़र में अनुग्रह दिलाया।

"अपनी दया के कारण परमेश्वर अपना न्याय भेजने से पहले एक चेतावनी जरूर भेजता है।"

मूसा अध्याय 4
मुख्य वचन– निर्गमन 12:13, "मैं उस लहू को देखकर, तुमको छोड़ जाऊँगा"।

पहला दिन– निर्गमन 12:1–28 तक पढ़े।
1. प्रत्येक घराने को कौनसे पशु को बलिदान के लिए चढ़ाना था?
2. बलिदान वाले जानवर का वर्णन करो?
3. लहू के साथ लोगो को क्या करना था? क्यो?
4. आयत 12–13 में आप कितनी बार, "मैं करूँगा (I Will)" देखते है?
5. इस स्मरण दिन के विषय में उन्हे अपनी संतानों को क्या और कैसे बताना था?
6. क्या आपने इस विशेष दिन के बारे में अपने बच्चो को बताया या वर्णन किया है?

दूसरा दिन– निर्गमन 12:29–32 पढ़े
1. आधी रात (मध्यरात्रि) के समय क्या हुआ?
2. आज आपके परिवार में लहू के द्वारा किसकी रक्षा की जाती है?
3. जो लोग अभी भी लहू की सुरक्षा में नही है, उनके लिए प्रार्थना करें (इब्रानियों 9:22)

तीसरा दिन– निर्गमन 12:33–51 पढ़े
4. परमेश्वर ने किस प्रकार से मिस्त्रियों के हृदयो को अपने लोगो के प्रति उदार बना दिया?
5. कौन और क्या चीज़े मिस्त्र से बाहर निकली?
6. अखमीरी रोटी के बारे में वर्णन करे।
7. फसह के साथ और कौन–सा चिह्न इस्त्राएलियों या परमेश्वर की संतानों के लिए था?
8. नया नियम आज के विश्वासियों के खतना के लिए क्या कहता है?
(देख कुलुस्सियों 2:11–13 और गलातियों 5:15)

चौथा दिन– मरकुस 14:12–25 पढ़े
1. यूहन्ना 1:29 में यूहन्ना ने 'परमेश्वर का मेम्ना' किसे कहा?
2. यशायाह 53:6–7 से, किसके पापो को यीशु पर जो पवित्र और सिद्ध मेम्ना है, डाला गया?
3. हमारे पापों को ढापने के लिए परमेश्वर किस चीज़ की मांग करता है?
4. मरकुस 14:12 में यीशु ने अपने चेलो के साथ कौनसा पर्व मनाया?
5. किसकी देह और लहू के बारे में यीशु बता रहे थे?
6. फसह का मेम्ना कौन है?

पाँचवा दिन– प्रतिबिंद्ध (विचार)

1. यूहन्ना 19:33 और निर्गमन 12:46 के बीच में क्या बात सामान्य या एक जैसी है?
2. आज हम फसह के पर्व को कैसे मनाते है?
3. क्या आपने अपने बच्चो को फसह का अर्थ बताया है?
4. इस अध्याय से व्यक्तिगत तौर पर आपने क्या सिखा है?

"बिना लूह बहाए, कोई पाप की क्षमा नही है"।

मूसा– अध्याय 5

फसह

मुख्य वचन– निर्गमन 14:13, "डरो मत, खड़े–खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिए करेगा"।

पहला दिन– निर्गमन 11:1–12:36, यूहन्ना 1:29, 1कुरिन्थियों 5:7 पढ़े।

1. पहिलौठे पर आए परमेश्वर के दण्ड (न्याय) से बचने के लिए इस्त्राएलियों को क्या करना था?
2. इब्रानियों 9:22 लहू के विषय में क्या कहता है?
3. कैसे यीशु आपके लिए फसह का मेम्ना है?
4. लोगो को मिस्त्र में से कौनसी चीज़े बाहर ले जाने की अनुमति दी गई थी?

दूसरा दिन– निर्गमन 13:17–18, 21:22; 14 पढ़े।

1. यहोवा परमेश्वर ने इस्त्राएल की संतानो की कैसे अगुवाई करी?
2. परमेश्वर ने मूसा के द्वारा कौनसी आज्ञाएं (आदेश) दी?
3. मिस्त्र की सेना और इस्त्राएलियों के बीच में क्या आ गया?
4. जब मूसा ने अपना हाथ बढ़ाया तो कौनसा बड़ा चमत्कार हुआ?
5. अध्याय 14 के अंत में लोगो का क्या प्रत्युत्तर था?

तीसरा दिन– निर्गमन 15:1–11 तक पढ़े।

1. परमेश्वर के गुणो की सूची बनाएं।
2. आज जो परमेश्वर आपके लिए है, उसके लिए उसका धन्यवाद करे।

चौथा दिन– निर्गमन 15:22 अध्याय–16 तक पढ़े। मिस्त्र हमारे पुराने जीवन को (दर्शाता) चिन्हित करता है तथा लाल समुद्र आज्ञाकारिता में हमारे आगे बढ़ने को दर्शाता है।

1. मरूभूमि में इस्त्राएलियों के लिए पहली चुनौती कौनसी थी, जिसका उन्होने सामना किया?
2. एक विश्वासी के रूप में क्या आपने भी कभी कड़वाहट या कुड़कुड़ाहट का सामना किया है?
3. यूहन्ना 4:13 में पानी किसको दर्शाता है?
4. जब आप सूखे और जरूरतमंद होते है तो प्रभु कैसे आपको तरोताज़ा करता है?

पाँचवा दिन– पढ़े निर्गमन अध्याय 16

1. पाप की मरूभूमि में वे किस बात के लिए कुड़कुड़ा रहे थे?

2. यहोवा परमेश्वर ने कैसे उपाय या पूर्ति किया?
3. मन्ना को बटोरने के लिए क्या निर्देश दिए गए थे?
4. अगली पीढ़ी के लिए क्या निर्देश दिए गए थे?
5. कितने समय/वर्षो तक लोगो को मन्ना मिलता रहा (आयते 35)?
6. यूहन्ना 6:35 के अनुसार, जीवन की रोटी कौन है? हम इस रोटी के द्वारा किस प्रकार पोषित किए जाते है?

"मेम्ने की मृत्यु यीशु की मृत्यु की ओर र्दशारा करती है, यही बाईबिल का ह्रदय है"।

मूसा अध्याय 6
निर्गमन अध्याय 18
मुख्य वचन– "सब के लाभ पहुँचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है"। 1कुरिन्थियो 12:7

पहला दिन– निर्गमन 8:1–12 पढ़े

1. मूसा के परिवार के विषय में हम क्या जानते है?
2. जंगल में इस्त्राएलियों ने कहां पर छावनी डाली थी?
3. मूसा ने यित्रो को परमेश्वर के जो महान् कार्य बताएं उनमें से कुछ का वर्णन करो।
4. परमेश्वर ने आपके लिए कौनसे महान् कार्य किए है, जिन्हे आप दूसरो को बता सकते है?
5. परमेश्वर की भलाई का जश्न उन्होने कैसे मनाया?

दूसरा दिन– निर्गमन 18:13–24 तक पढ़े

1. मूसा लोगो के लिए ऐसा क्या करता था, जिसमें पूरा दिन लग जाता था?
2. यित्रो द्वारा मूसा को मदद करने के लिए क्या सलाह दी गई?
3. आयत 20 के अनुसार यित्रो को मूसा के लिए क्या महसूस हुआ जिस पर मूसा को लोगो के लिए ध्यान करना चाहिए?
4. जिन लोगो को मूसा चुनना चाहता था, उनकी क्या योग्यताएं थी?
5. इस बात ने किस प्रकार मूसा की सहायता करी? (आयत 23)

तीसरा दिन– 1कुरिन्थियो 12:14–26 पढ़े

1. विश्वासियों की देह में, यह निर्णय कौन करता है कि किसको कौनसा वरदान मिलना चाहिए?
2. कमज़ोर भागो (अंगो) के विषय में यह क्या कहता है?
3. क्या हम एक साथ कार्य कर के ज्यादा बातो को पूरा कर सकते है, जैसी कि परमेश्वर की योजना भी है?

चौथा दिन– रोमियों 12:3–8 और इब्रानियों 13:17 को पढ़े।

1. क्या आप मसीह की देह में अपने महत्त्व को समझते है?
2. आप अगुवो को जिम्मेदारियों में उनके रोल (किरदार) को कैसे देखते है?
3. इनमें से कौनसे गुण या योग्यताएं आपके अंदर है?
4. क्या आप परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे कि वह इन क्षेत्रो में से एक में आपको मजबूत करे?

"एक समझदार अगुवा धर्मी सलाह को सुनता और उसके अनुसार कार्य भी करता है"।

बाईबिल के महापुरूष

यहोशू

परिचय

वचन– यहोशू की पुस्तक

विषय– इस्त्राएल परमेश्वर के वायदो का दावा करते तथा प्राप्त करते है ताकि वे विश्राम पा सके।

रूप रेखाः
अध्याय 1–4 – वायदे के देश (भूमि) में प्रवेश करना।
अध्याय 5–21 – युद्धो और संघर्षो द्वारा देश को जीतना।
अध्याय 22–24 – देश में वो खतरे, जिनके प्रति हमें सावधान रहना है ताकि हम विजय को प्राप्त कर सके।

सारांश
यहोशू की पुस्तक अब्राहम के परिवार की वंशावली और इस्त्राएल देश के बीच की एक कड़ी है। अब्राहम से वायदे के देश के लिए बांधी गई वाचा को अब 500 वर्षो से अधिक समय हो चुका है (उत्पत्ति 12:7)।

मूसा मर चुका था और अब यहोशू लोगो को उस देश में ले लाएगा। यहोशू मूसा के साथ मरूस्थल में बिताए गए वर्षो के दौरान था। वह उस समय भी मूसा के साथ था जब मूसा द्वारा चमत्कारिक रूप से लाल समुद्र को पार किया गया, जब मिस्त्र से लोगो को निकालकर जंगल में ले जाया गया। वह उस समय भी साथ था, जब इस्त्राएल के लोगो को मरूभूमि में परमेश्वर की उपस्थिति द्वारा अगुवाई करी गई, जो उनके साथ दिन में बादल के खम्भे तथा रात में आग के खंभे के रूप में उनके साथ रहता था। वह मूसा के साथ पहाड़ की चोटी पर भी था जब परमेश्वर के मुहँ से आज्ञाओ को दिया गया था (निर्गमन 33:11)।

यहोशू और कालेब उन बारह भेदियों में से थे जिन्हे मूसा ने कनान देश का भेद लेने के लिए भेजा था (गिनती 13:8)। वे परमेश्वर की वाचा के साथ खड़े हुए जब उन्होने वायदे के देश के बारे में अच्छी रिपोर्ट (खबर) दी। वे उन अन्य दस भेदियों के खिलाफ खड़े हुए जो यह सोचते

थे कि एक प्रजा के रूप में वे कभी–भी वायदे के देश को जीत नही पाएंगे। लोगो ने परमेश्वर पर विश्वास करने को नही चुना।

यहोशू न केवल एक विश्वास के व्यक्ति की कहानी है, बल्कि कनान देश को उन गोत्रो द्वारा जीतने की कहानी भी है जिन्हे मूसा मिस्त्र देश से बाहर लेकर आया था। इस्त्राएल एक प्रजा, एक जाति बन चुकी थी और अब वे उस देश को प्राप्त करने वाले थे जिसका वायदा अब्राहम से कई वर्षो पूर्व उत्पत्ति 12:7 में किया था, "मैं यह भूमि तेरे वंश को दूंगा"। परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को लाल समुद्र को दो भाग करके मिस्त्र से छुडाया था। उस दो भाग हुए लाल समुद्र से लोग सूखी से पार हो गए। उन्ही लोगो को जंगल में लगभाग 40 वर्षो तक भटकना पड़ा उनकी अनाज्ञाकारिता और कुड़कुड़ाहट के कारण वे जंगल में ही मर गए।

उस पीढ़ी में से अब केवल 2 ही विश्वासयोग्य पुरूष बचे थे, यहोशू और कालेब, जो कि वायदे के देश में जाएंगे। यहां तक कि मूसा पर पहाड़ की चोटी से उस वायदे के देश को देख पाया। परमेश्वर अनाज्ञाकारिता को बड़ी गंभीरता से लेता है और हमें भी इस बात से कोई छूट नही मिली है हम चाहे तो अपने तथा अपने परिवारो के लिए आशीष प्राप्त कर सकते है या फिर उसे खो सकते है।

पद्यांश– यहोशू अध्याय 1–4

मुख्य वचन– यहोशू 1:7–8 "इतना हो कि तू हियाव बाँधकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है, उन सबके अनुसार करने की चौकसी करना; और उस से न तो दाहिने मुड़ना और न बाएं, तब जहाँ–जहाँ तू जाएगा वहाँ"–वहाँ तेरा काम सफल होगा। व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिए कि जो कुछ उसमें लिखा है, उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे, क्योकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा।

विषय वस्तु– परमेश्वर के लोगो को हियाव बांधकर दृढ़ रहना चाहिए।

जीवन का सिद्धांत– जब हम विश्वास से कदम आगे बढ़ाते है तो परमेश्वर कार्य कर सकता है।

सारांश
वाचा का संदूक सबसे पहले गया। इसने ही यरदन नदी में मार्ग बनाया। यह संदूक इस बात को लोगो के सामने दर्शाएगा कि जीवित परमेश्वर उनके मध्य में है और वह पानी में से मार्ग

निकालता है। यह उसी प्रकार से ही था जब परमेश्वर ने मूसा की अगुवाई में लाल समुद्र के बीच में से मार्ग को बनाया था।

लाल समुद्र को पार करना संसार को छोड़ने की इच्छा को दर्शाता है (क्योकि मिस्त्र एक तरह से संसार को प्रदर्शित करता है) तो उसी प्रकार से यरदन नदी को पार करना उन सभी वायदो में प्रवेश करने की इच्छा को दर्शाता है जो परमेश्वर ने विश्वासियों को प्रभु यीशु मसीह में दिए है। यह इस चुनाव को स्मरण दिलाता है कि जंगल के सभी अविश्वास को त्यागकर अब हम पूरी तरह से उन चीज़ो को प्राप्त करने के लिए तैयार है, जो परमेश्वर ने हमारे लिए उपलब्ध कराई है।

प्रत्येक गोत्र में से एक व्यक्ति को और कुल बारह लोगो को चुना गया ताकि वे इस अवसर (घटना) को यादगार बनाए। 12 पत्थरों की एक वेदी (स्मारक) को नदी के बीच में खड़ा किया गया तथा वैसे ही स्मारक को नदी के किनारे पर भी खड़ा किया गया। यह आने वाली पीढ़ियों/संतानों के लिए यादगर जगह थी जिसे वो देखे और जब अपने माता–पिता से पूछे तो वे इस घटना का वर्णन उन्हे करे।
हमे भी अपने बच्चो के साथ ऐसे क्षणो को जरूर बांटना चाहिए अर्थात् उन्हे बताना चाहिए। परमेश्वर की सामर्थ के क्षण जो उसने हमारे परिवारों के ऊपर दर्शाये थे। शायद हमारे पास उसकी एक स्पर्शनीय तस्वीर होगी या फिर उस घटना को दर्शाने के लिए कोई लेख होगा। हम शायद इसका इस्तेमाल परमेश्वर की सामर्थ के बारे में दूसरो को दिखाने और बताने के लिए कर सकते है। यह एक स्पर्शनीय तरीका भी हो सकता है जिसके द्वारा हम अपने जीवन से उसको सही महिमा दे सके। "इसलिए कि पृथ्वी के सब देशो के लोग जान ले कि यहोवा का हाथ बलवन्त है और तुम सर्वदा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो।" (यहोशू 4:24)

पंद्याश– यहोशू अध्याय 5–8

मुख्य वचन– यहोशू 6:27, "और यहोवा यहोशू के संग रहा; और यहोशू की कीर्ति उस सारे देश में फैल गई"।

विषय वस्तु– स्वर्गीय सेना का यहोवा परमेश्वर नई पीढ़ी के लिए यरीहो नगर से युद्ध करता है।

जीवन का सिद्धांत– विश्वासियों के अंदर परमेश्वर की सामर्थ्य को दूसरो द्वारा पहचानना जरूरी है।

सारांश

यह एक नई पीढ़ी है। यह वह पीढ़ी थी जिसने मूसा द्वारा लोगो को परमेश्वर की व्यवस्थाओं को प्राप्त करते नही देखा था। पिछली पीढ़ी ने उन सभी बातो को नही माना था जो परमेश्वर ने उनसे कही थी। खतना वाचा का वह चिह्न था जो परमेश्वर ने इस्त्राएल के लिए ठहराया था। यह चिह्न इस अर्थ को बताता था कि वे परमेश्वर के लिए अलग किए गए है। फसह का पर्व इसलिए मनाया जाता था क्योकि परमेश्वर इस्त्राएल के पहिलौठो का छोड़कर आगे निकल गया था जब उस रात सभी मिस्त्रियों ने अपने पहिलौठो को खो दिया था। मेम्ने को मारकर उसके लहू को दरवाजे के चारो अंलगो को लगाना इस बात को दर्शाता था कि एक दिन परमेश्वर का मेम्ना सारे जगत के पाप को अपने ऊपर उठा लेगा (यूहन्ना 1:29)।

अध्याय 5 में इस्त्राएल के सभी नरो (पुरूषो) का गिलगाल में खतना किया गया। गिलगाल का अर्थ होता है, "दूर हटाना"। क्योकि यहा पर यहोवा ने इस्त्राएल से कहां था, "तुम्हारी नामधराई जो मिस्त्रियों, मे हुई थी, उसे मैं ने आज दूर की है।" (यहोशू 5:9) स्पष्ट रूप से, जंगल में भटकने के दौरान इस्त्राएली जाति ने इस परम्परा को छोड़ दिया था; तथा इसी कारण से उनके तथा अन्य जातियों के बीच में अंतर का चिह्न गायब हो गया था।

आज हमारा अलगाव/अंतर क्या है? क्या हम परमेश्वर की संतान होने के नाते अलग दिखते और अलग कार्य करते है? विश्वासियों को किस बात के लिए जाना जाता है?

इससे पहले कि उस देश को जीता जाएं उन्हे परमेश्वर की प्रजा के रूप में उनसे अलग दिखना बहुत जरूरी था। नया नियम "हृदय का खतना" के विषय में कहता है (देखे रोमियों 2:29) तथा यह एक ऐसे हृदय को दर्शाता है जो सारे शारीरिक/प्राकृतिक जीवन की बातो को छोड़ने के लिए तैयार रहता है ताकि वह केवल परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो सके। यह बात पहले युद्ध (लड़ाई) से पहले करी गई। इन लोगो की उस देश में क्या दशा रही होगी? वे शायद कमज़ोर तथा असुरक्षित रहे होंगे। वे विजय प्राप्त करने के लिए पूर्ण रीति से प्रभु यहोवा पर निर्भर थे।

गिलगाल में दूसरी घटना फसह का पर्व मनाना था। मिस्त्र से निकलने के बाद यह केवल दूसरी बार ही मनाया जा रहा था। फसह के पर्व के अगले दिन ही मन्ना मिलना बंद हो गया (5:12)। जब तक हमारी कठिन परिस्थिति तथा जरूरते होती है, परमेश्वर हमें निरंतर देता रहता है। परमेश्वर विश्वासयोग्यत के साथ पूर्ति करता है। यह इस अध्याय की तीसरी घटना है, और अब लोग कनान देश में पैदा होने वाली प्राकृतिक चीज़ो के ऊपर निर्भर रहना शुरू हो गए। यह

हमारी आत्मिक भूख को पूर्ण रूप से भरने के बारे में बताता है, जिसके लिए अच्छे स्त्रोत हमें मसीह में मिलते है।

अध्याय 5 की चौथी घटना में, यहोशू का सामना सेनाओ के सेनापति यहोवा परमेश्वर से होता है। स्पष्ट रूप से इस जीत के लिए जो अभियान था, उसके लिए योजना और रणनीति बनाना यहोशू का कार्य नही था, बल्कि स्वंय परमेश्वर ही ने सब कुछ करा, जैसा कि वह आज भी करता है। यह युद्ध ऐसा नही होगा जैसा कि सामान्य मनुष्य लड़ते है। यह यहोवा का युद्ध और यहोवा की विजय थी। बस उन्हे जो करना था वो यह था कि दीवारो के चारो और चुपचाप घुमना और फिर एक जयजयकार करना। यह मनुष्य का मार्ग या तरीका नही था। परमेश्वर पर भरोसा करना और परमेश्वर के वचनो और उसके मार्गो पर चलना ही हमे विजय की ओर ले जाता है (यशायाह 55:8)।

राहाब वेश्या ने भेदियों को बताया कि उसके लोग इस्त्राएलियों से 40 वर्षो से डर हुए है। उन्होने उनके लाल समुद्र पर हुए अद्भूत छुटकारे के विषय में तथा सीहोन, ओग अमोरी राजाओं के ऊपर विजय की कहानियों के बारे में सुना था। जिन दानवो से इस्त्राएली लोग कादेशबर्ने में डर रहे थे, वे स्वंय ही 40 वर्षो से उनके घूमने (भटकने) के दौरान उनसे डरे हुए थे। इतने समय मे तो लोग उस वायदे के देश में जीत का अनुभव कर चुके होते तथा साथ ही यहोवा के हाथ को भी। कितने समय तक मैने उस पूर्ण जीवन का अनुभव नही किया है, जो कि परमेश्वर ने मुझसे वायदा किया था? जब हम यहां पर ही है तो हमें आशा करनी चाहिए तथा साथ ही तैयार रहना चाहिए ताकि हम उन रास्तो से गुजर सके और सफल हो सके जहां से हम अभी तक नही गुज़रे है।

राहाब के साथ ऐसा ही हुआ उसके चुनाव ने उसका तथा उसके परिवारों के भाग्य को निर्धारित कर दिया। हमारा विश्वास हमारे कर्मो से जाना जाता है। जो साहस यहोशू तथा राहाब के द्वारा दिखाया गया, उसी की मांग हमारे मसीह जीवन से भी की जाती है और बस हमे सर्वशाक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ चाहिए। हमें बस अपने विश्वास के कदम को आगे बढ़ाकर, उसके वायदो को प्राप्त करना होगा। यह हमारे लिए और हमारे परिवारो के लिए तथा बाकी सब लोगो के लिए है जो उसके कहलाते है। राहाब एक अन्यजाति स्त्री थी न कि यहूदी। तौभी मत्ती अध्याय 1 में लिखित वंशावली जो कि मसीह यीशु की है, उसका नाम पाया जाता है क्योकि उसने अपना कदम बढ़ाया और इस्त्राएल की तरफ हो गई। वह आगे जाकर राजा दाऊद की परदादी बनी। इस कहानी में क्या ही अद्भूत चमत्कार है।

जैसा कि हम आयत 5:13 में यहोवा के स्वर्गदूत को देखते है, जोकि मसीह का ही पूर्व अवतरित प्रकटीकरण है और वही युद्ध का मुख्य सेनापति/सेनानायक है। और हमारे खुद के युद्धो में भी यह बात सत्य है कि ये युद्ध हमारे नही है बल्कि यहोवा परमेश्वर के है। (1शमूएल 17:47) यह बात हमें बहुत सारी चिंताओं, परेशानियों और व्याकुलता से बचा सकती है। यरीहो पहला नगर था जिसे जीतना था, परमेश्वर ने बड़े ही नाटकीय ढंग से उसमें कार्य किया जिससे दीवारे बाहर की ओर गिर पड़ी तथा उसके बाद दल ने उस पर चढ़ाई कर दी। परमेश्वर अपने लोगो के लिए लड़ता है जब वे "साहसी तथा दृढ़" होते है और अपना पूरा भरोसा उस पर रखते है। (1:6, 7, 9, 18; 10:25)

पद्यांश अध्याय 9–18

मुख्य वचन– यहोशू 11:23(a) "जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया; और उसे इस्त्राएल के गोत्रो और कुलो के अनुसार बाँट करके उन्हे दे दिया"।

विषय वस्तु–वह नेतृत्व जो परमेश्वर की आज्ञाकारिता में अगुवाई करता है उससे विजय और विश्राम दोनो आते है।

जीवन का सिद्धांत– प्रत्येक युद्ध से हम परमेश्वर पर अपने विश्वास और आत्मविश्वास को बनाते जाते है।

सारांश

अध्याय नौ में युद्ध आरंभ होता है। अध्याय 10–11 में यहोशू पाता है कि परमेश्वर उसके प्रति विश्वासयोग्य है यहां तक कि जब उसने परमेश्वर से पूछे बिना ही गिबोनियों के साथ एक समझौता कर लिया था। परमेश्वर उसे 5 छोटे राज्यो (साम्राज्यों) के ऊपर विजय का आश्वासन देता है। "यहोवा ने उन्हे बहुत घबरा दिया, यहां तक कि बड़े–बड़े पत्थरो को उन पर बरसाया, और वे मर गए और जो ओलो से मारे गए उनकी गिनती इस्त्राएलियों की तलवार से मारे हुआ से अधिक थी" (यहोशू 10:11) अध्याय 10:13 में, यहोशू को "अतिरिक्त दिन का उजियाला" दिया गया। क्योकि सूर्य उस समय तक थमा रहा और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा, जब तक उस जाति के लोगो ने अपने शत्रुओ से बदला न लिया।

जिन शत्रुओं को परमेश्वर बाहर निकाल रहा था, वे कई देवताओं की उपासना करते थे, जिनमें भूमि उत्पन्नता की पूजा, जादू–टोना तथा बच्चो की बलियाँ भी शामिल थे। परमेश्वर तथा उस देश के लिए यह बहुत ही घृणा की बात थी। (व्यवस्थाविवरण 12:29–31; 18:9–14)

अध्याय 12–18 हमें उन क्षेत्रो तथा राजाओं का एक सारांश देते है जिन पर कब्जा किया गया था। इस्त्राएलियों ने 31 राजाओं को हराया था। लेवियों को अन्य गोत्रो के साथ मिलाने के कारण, उन्हे ऐसा बनाया गया कि सभी इस्त्राएलियों की आँखे उन पर ही थी। ताकि उनके द्वारा परमेश्वर का वचन देश के सभी भागो तक जा सके। हम देखते है कि हमारा करूणामय परमेश्वर अध्याय 20 में शरणस्थानो को भी बनवाता है। ये छह नगर इस्त्राएल के लोगो के लिए शरणस्थान ठहरेंगे तथा साथ ही परदेशियों तथा उनके मध्य के तीर्थ यात्रियों के लिए भी। यदि कोई गलती से किसी को मार डाले तो वह इनमें जाकर शरण ले सकता था।

परमेश्वर ने अब्राहम के वंश से यह वायदा किया था कि वह कनान देश को उनकी निज भूमि होने के लिए देगा और अब वे उसको पा चुके तथा उसमें निवास भी कर रहे थे। और स्वर्गीय कनान का वायदा भी परमेश्वर के सभी आत्मिक इस्त्राएली लोगो के लिए निश्चित तौर पर है। क्योकि यह उसका वायदा है जो कभी झूठ नही बोलता है।

पघांश – अध्याय 21–24

मुख्य वचन– यहोशू 24:15 ''परन्तु मै तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा।''

विषय वस्तु– चुनौती और चेतावनियो वाले यहोशू के अंतिम वचन।

जीवन का सिद्धांत– परमेश्वर की विश्वासयोग्य को स्मरण रखा जाना चाहिए तथा प्रत्येक पीढ़ी तक उसे पहुँचाना भी चाहिए।

सारांश– यहोशू की पुस्तक के अन्तिम भाग मे 'परमेश्वर की सेवा (आराधना) करना ही इस्त्राएल का मुख्य कर्तव्य है' नामक विषय ही सबसे प्रमुख है। (अध्याय 22–24) 'सेवा करना' शब्द का इस्तेमाल अध्याय 22 मे ही 16 बार किया गया है।

अन्तिम अध्यायो मे हमे यहोशू द्वारा दिए गए तीन संदेश मिलते है। सबसे पहला संदेश (प्रचार) रूबेन, गाद और मनरशे के अढ़ाई गोत्रो को दिया गया था। वे लोग यरदन के पार अपनी भूमि (देश) मे वापस लौटने वाले थे। दूसरा संदेश इस्त्राएल के अगुवो, प्राचीनो, न्यायियो तथा अधिकारियों को दिया गया। तीसरा संदेश सभी लोगो को दिया गया कि परमेश्वर के प्रति निरंतर विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी बने रहे।

यहोशू ने निर्णयो को लेने के लिए प्रचार किया। उसने उन्हे उनके अतीत के बारे मे याद दिलाते हुए आरंभ किया और बताया कि यहोवा ने उनके लिए क्या किया था। क्योकि परमेश्वर उन्हे प्रचीन बेबीलोन की संस्कृति से बाहर निकाल लाया था तथा उसके बाद मिस्त्र देश मे से निकालकर अब्राहम को वायदा किए हुए देश मे। इसका मुख्य ज़ोर परमेश्वर ने जो उसके लिए किया, इस बात पर था। शायद लोगो के अन्दर इस लम्बी विजय के कारण कुछ परीक्षांए भी आ जाए सबसे पहले सैनिको के अन्दर कि वे इन विजयो के कारण घमण्ड करने लगे। यहोशू इस तरह के पाप को आने की अनुमति नही देता है। वह बार–बार यहोवा के नाम को लेता है। यहोशू 24:3–13 ''मैने तुम्हारे पिता अब्राहम..... इसहाक को उसे दिया.....फिर उसे एसाव और याकूब दिए..... मै ने उन्हे पहाड़ी देश दिया..... मैने मूसा को भेजा..... मैने मिस्त्रियो को पीडाएं दी..... मै तुम्हे बाहर लाया..... उन्हे मैने तुम्हारे हाथो मे कर दिया..... मैने सबको नष्ट कर दिया..... मैने तुम्हे छुड़ाया..... मैने तुम्हारे आगे अपने दूत भेजे..... मैने तुम्हे यह देश दिया है।

यहोशू चाहता था कि लोग इस बात को पहचाने कि उनके पितरो के परमेश्वर ने अपनी सार्वभौमिकता के कार्यो को अपने लोगो के स्थान पर किया है। वह युद्ध मे उनके साथ रहा और यहोशू ने उन्हे चुनौती दी कि वो इस बात को याद रखे और प्रार्थना करे कि वह उनके साथ ऐसे ही बना रहे, कही ऐसा न हो कि वे परमेश्वर को भूल जाए। यह न केवल परमेश्वर की पहचान और उसका चरित्र है कि वह याद रखे। परन्तु जो कुछ भी वे पहले ये तथा बाद मे होंगे यह भी परमेश्वर का चुनाव नही है बल्कि हमारा चुनाव है।

आयत 14–15 मे उसका बोझ है, ''इसलिए अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओ की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्त्र मे करते थे, उन्हे दूर करके यहोवा की सेवा करो और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हे बुरी लगे; तो आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे। परन्तु मै तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा।''

एक और स्मरण का पत्थर खड़ा किया गया ताकि परमेश्वर और उसके लोगो के बीच मे एक वाचा बांधी जाए कि वे उसकी आज्ञा मानेंगे। इस प्रकार से यहोशू की पुस्तक की शुरूआत और अंत दोनो ही स्मरण के पत्थर के साथ होती है। परमेश्वर ने जो कुछ हमारी पीढ़ी मे हमारे लिया किया है उन्हे हम किस प्रकार से अपने ध्यान के केन्द्र मे रख सकते है? अपनी संतानो के समाने हमे किस प्रकार के पत्थरो को रखने की जरूरत है? आइए हम हमारे वर्षो, हमारी विजयो तथा हमारे जीवनो के ऊपर परमेश्वर के सार्वभौमिक कार्यो को प्रदर्शित करे या दिखाए। जीवन मे दर्द भी एक उद्धेश्य के लिए है।

परमेश्वर से असंभव भी सभंव है।
भूलना हमे परमेश्वर के अद्भूत कार्यो से काट देता है।
हमारे बनाने वाले (रचयिता) के पास एक धन्यवादी ह्रद्य के साथ आना महत्वपूर्ण है। वह सभी पीढ़ियो मे भी नही बदलता है। यहोशू 24:31 मे, यहोशू के लिए कितनी बड़ी श्रद्धांजलि दी गई है। यहोशू के जीवन भर इस्त्रएली यहोवा ही की सेवा करते रहे।

हमारा सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर आज भी हमारे युद्धो को लड़ना चाहता है। हमे बुलाया गया है कि हम उसके वायदो का दावा करने, विजय का लुत्फ (आनन्द) उठाये। 1कुरिन्थियो 15:57 कहता है, ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमे जयवन्त करता है।'' होने पाए कि हम यीशु मसीह द्वारा पूरा किए गए कार्य मे विश्राम पाए।

यहोशू 1:3 कहता है कि यह देश (विश्राम का स्थान) आपके लिए परमेश्वर की ओर से एक दान है। आज्ञाकारिता मे चलते हुए ही हम इसे पा सकते है। निर्गमन 33:14 मे यहोवा मूसा से कहता है ''मैं आप तेरे संग चलूँगा और तुझे विश्राम दूँगा।'' हम जो यीशु के अनुयायी है, परमेश्वर के वायदो और विश्राम का आनन्द उठा सकते है। भजन संहित 91:1 कहता है, ''जो परमप्रधान के द्दाए हुए स्थान मे बैठा रहे वह सर्वशक्तिमान की छाया मे ठिकाना पाएगा।'' पवित्र आत्मा की हमारे अंदर उपस्थिति आज हमे यह विश्राम प्रदान करती है जब हम परमेश्वर का आज्ञाकारिता मे होकर चलते है।

कनान देश इस्त्राएल के लिए एक वरदान के रूप मे था परन्तु इस्त्राएलियो को जाकर उसे प्राप्त करना था। उसी प्रकार से परमेश्वर का अनुग्रह हमारे लिए है, परन्तु हमे परमेश्वर के वायदो के ऊपर अपने विश्वास के कदम को रखने के द्वारा इसे प्राप्त करना जरूरी है।

यहोशू अध्याय–1

यहोशू अध्याय 1–4

मुख्य वचन – यहोशू 1:9 ''हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; भय न खा और तेरा मन कच्चा न हो; क्योकि जहाँ–जहाँ तू जायेगा वहाँ–वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।''

विषय वस्तु – जब हम विश्वास के साथ बाहर निकलते है तो परमेश्वर कार्य कर सकता है।

पहला दिन–पढ़े यहोशू 1:1–9

1. परमेश्वर ने यहोशू को क्या निर्देश दिया?
2. उन वायदो की सूची बनाए जो परमेश्वर ने यहोशू को दिए?
3. उन आदेशो (आज्ञाओ) की सूची बनाए जो परमेश्वर ने विशेष रूप से यहोशू को दिए?
4. परमेश्वर ने कितनी बार कहा कि ''हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा''? आप क्या सोचते है कि इसे क्यो दोहाराया गया है?
5. क्या आपके जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र है जिसमे आपको दृढ़ होने की जरूरत है?
6. क्या आप इसे दूसरो को बताएंगे ताकि वे आपके लिए प्रार्थना कर सके?
7. एक वायदे को लिखे जो परमेश्वर ने आज आपको दिया है?

दूसरा दिन – पढ़े यहोशू 1:10–18

1. अधिकारियो (अगुवो) ने लोगो को क्या निर्देश दिए?
2. कौन से गोत्रो को मदद करनी थी इससे पहले कि वे उस देश मे विश्राम पाए?
3. गोत्रो ने यहोशू के नेतृत्व के प्रति कैसा प्रत्युत्तर दिया?
4. जो आज्ञा नही मानते थे उनके साथ क्या होना चाहिए था?

तीसरा दिन – पढ़े यहोशू अध्याय 2 और यहोशू 6:22–25

1. राहाब के विषय मे जो आपने सीखा, उसकी सूची बनाएं।
2. इन आयतो के द्वारा आप राहाब के बारे और ज्यादा सीखकर उनकी सूची बनाएं (इब्रानियो 11:31, याकूब 2:25; मत्ती 1:5)।
3. आप क्या सोचते है कि परमेश्वर आपको उसके (राहाब) जीवन से क्या सिखाना चाहते है और परमेश्वर स्त्रियो के जीवन कैसे कार्य करता है?
4. राहाब के जीवन से कौनसी बातो या पाठो को आप आज अपने जीवन मे उपयोग कर सकते है या फिर इसके द्वारा किसी और की मदद कर सकते है?
5. भेदियो ने उससे क्या वायदा किया था?
6. क्या उस लाल कपड़े के बीच, जिसने राहाब को बचाया और लहू के द्वारा हमारे उद्धार के बीच मे कई संबंध हो सकता है?

चौथा दिन – पढ़े यहोशू अध्याय 3

1. जब इस्त्राएलियो ने यरदन नदी को पार किया तो उनके आगे क्या गया था?
2. निर्गमन 25:10–22 के अनुसार वाचा का संदूक क्या था?
3. आप क्या सोचते है कि क्यो परमेश्वर ने वाचा के संदूक के द्वारा लोगो की अगुवाई करी? (यह किस चीज़ को दर्शाता है?)
4. वे कैसे जान पाएंगे कि जीवित परमेश्वर उनके मध्य में है (3:10)?
5. उस चमत्कार का वर्णन करे जो याजको द्वारा नदी में पैर रखने/छूने से हुआ था?

पाँचवा दिन– पढ़े यहोशू अध्याय 4

1. यहोशू ने इस्त्राएल के 12 पुरूषो को क्या निर्देश दिए?
2. ये पत्थर हमेशा के लिए किस बात का प्रतिनिधित्व करेंगे?
3. एक स्मारक का क्या उद्देश्य था (4:24)?
4. क्या आप अतीत के किसी उस समय को याद कर सकते है जब परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से आपके परिवार के लिए कार्य किया था?
5. एक यादगार या स्मारक के रूप में आप क्या सुरक्षित रख सकते है जिसे आप दूसरो से बांट कर, परमेश्वर को महिमा दे सके?

परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करना परमेश्वर की सुरक्षा, सामर्थ और पूर्ति को लेकर आता है।

यहोशू अध्याय 2
यहोशू अध्याय 5–8
धर्मी भय और विश्वास परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को लेकर आते है।

पहला दिन– यहोशू अध्याय 5 पढ़े।
1. राजाओं ने इस्त्राएल के परमेश्वर के विषय में क्या सुना था?
2. किन लोगो का खतना करा गया और किनका खतना नही किया गया?
3. खतना किस चीज़/बात का चिह्न है (निर्गमन 17:10–11, यहेजकेल 36:23; रोमियों 4:10–11)?
4. मरूभूमि में वे कितने वर्षो तक रहे थे?
5. इतने लम्बे समय तक क्यो रहे?

दूसरा दिन– यहोशू अध्याय 6 पढ़े
1. यहोशू को यहोवा की ओर से क्या निर्देश प्राप्त हुए?
2. वाचा के संदूक के पहले और बाद में कौन गया?
3. साँतवे दिन उन्होने क्या अलग किया?
4. किसको छोड़ दिया गया और वह क्यो बच गई?
5. सोने और चांदी के साथ क्या किया गया?
6. परमेश्वर ने जो कुछ भी अपने वचन में कहा है उसे सावधानी पूर्वक मानना या अनुकरण करना कितना महत्त्वपूर्ण है, आप क्या सोचते है?

तीसरा दिन– यहोशू अध्याय 7 पढ़े
1. किसने यरीहो से क्या उठाया या लिया?
2. ऐ के युद्ध के दौरान यहोवा परमेश्वर इस्त्राएल के साथ क्यो नही था?
3. क्या छोटी सी अनाज्ञाकारिता का कार्य भी परमेश्वर के लिए महत्त्वपूर्ण है?

चौथा दिन– यहोशू अध्याय 7 पढ़े
1. उस पराजय/हार के बाद यहोशू तथा प्राचीनो की क्या प्रतिक्रिया थी?
2. परमेश्वर के लोगो के मध्य में पाप के होने से परमेश्वर का प्रत्युत्तर क्या होता है?
3. उन पापो के नाम लिखे जो इस्त्राएल ने परमेश्वर के विरूद्ध किए थे?
4. क्या ऐसे कोई पाप है जो आपको जीवन के युद्धो के ऊपर विजय प्राप्त करने से रोकते है?
5. परमेश्वर से उन पापो के विषय में पूछे जब आप उससे प्रार्थना करते हो? (भजन 19:12–14)

पाँचवा दिन– यहोशू अध्याय 8 पढ़े

1. आयत एक में परमेश्वर की कौनसी आज्ञा (आदेश) को दोहराया गया है?
2. क्या इस आज्ञा को जो परमेश्वर की ओर से है, आपके जीवन में भी दोहराने की आवश्यकता है?
3. ऐ पर विजय प्राप्त करने के बाद यहोशू ने एबाल पर्वत पर क्या किया?
4. क्या ऐसी कोई विजय है जिसके लिए आपको परमेश्वर को धन्यवाद देने की आवश्यकता है तथा दूसरो के साथ बांटने की भी ताकि वे भी उत्साहित हो सके?

विश्वासियो के अंदर परमेश्वर की सामर्थ्य को दूसरो द्वारा पहचानना जरूरी है।

यहोशू अध्याय 3

यहोशू अध्याय 9–12 कनान देश को जीतने के लिए 7 वर्षो तक युद्ध।

पहला दिन– यहोशू 9:1–15 पढ़े

1. उन दलो के नाम बताए जो इस्त्राएल के विरूद्ध युद्ध करने के लिए एक साथ इकट्ठे हुए?
2. यहोशू 3:10 को देखे और बताएं कि क्यो उन राजाओं के पास इस्त्राएलियों से डरने का एक कारण था?
3. गिबोनियों ने इस्त्राएलियों को कैसे धोखा दिया?
4. क्या आप उस कारण को देख सकते है कि क्यों इस्त्राएलियों को धोखा दिया जा सकता था?
5. उनकी गलतियों से हम क्या सीख सकते है?

दूसरा दिन– यहोशू 9:16–17 पढ़े

1. इस्त्राएलियों ने गिबोनियो की रक्षा के वायदो को क्यो निभाया? (व्यवस्थाविवरण 23:21)
2. गिबोनियों ने इस्त्राएलियों को क्यो धोखा दिया?
3. क्या आज भी ऐसे रास्ते है जिसके द्वारा लोग अपने आपको बचाना चाहते है परन्तु वे सही रास्ते नही है?

तीसरा और चौथा दिन– यहोशू अध्याय 10 पढ़े

1. इस पंद्याश द्वारा गिबोन नगर तथा वहां के लोगो का वर्णन करे?
2. किसने गिबोन पर हमला किया और क्यो किया?
3. उन तरीको या मार्गो के नाम बताए जिनके द्वारा परमेश्वर ने यहोशू की इस युद्ध में मदद करी?

4. यहोशू ने उन 5 राजाओं के साथ क्या किया जो कि इस युद्ध में शामिल थे?
5. क्या परमेश्वर जैसे यहोशू के साथ युद्ध में था, वैसे ही हमारे साथ है? (देखे यहोशू 10:42 और इब्रानियों 13:8)?
6. आयत 25 में यहोशू कौनसी समान आज्ञा (आदेश) को दोहराता है? और क्यो?

पाँचवा दिन– यहोशू 11 और 12 पढ़े

1. आरंभिक आयतो में परमेश्वर की ओर से क्या वायदा किया गया है?
2. व्यवस्थाविवरण 7:1–5, 12:29–31, 18:9–14 और 20:16–18 से कनानियों के पापो की सूची बनाएं।
3. क्या यहोशू परमेश्वर द्वारा कही गई सभी बातो के प्रति आज्ञाकारी था (11:5)?
4. इस्त्राएल द्वारा कनान देश के कितने भाग पर कब्जा किया गया? (11:23)
5. हमारे चारो ओर के बुरे संसार का हमारे जीवनो पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ते है?
6. हम किस प्रकार से भ्रष्टाचार (बुराई) को अपने घरो और जीवनो से दूर रख सकते है? (भजन 119:9–11)

"हमारे युद्धो से हम विश्वास का निर्माण करते है।"

यहोशू अध्याय 4
यहोशू अध्याय 13–20
वायदे के देश में विश्राम

पहला दिन– यहोशू अध्याय 13 पढ़े।

1. यद्यपि यहोशू बूढ़ा हो चूका है तौभी उसको कौनसा कार्य करना है?
2. बुजुर्ग लोग अभी भी किस प्रकार परमेश्वर और हमारे लिए उपयोगी है?
3. साढ़े नौ गौत्रो को कौनसी भूमि दी गई? तथा अढ़ाई गोत्रो को कौन भूमि? तथा लेवियों को कौनसी भूमि दी गई?

दूसरा दिन– यहोशू अध्याय 14 और 15

1. कालेब के अतीत तथा वायदे की भूमि के लिए उसके निवेदन का वर्णन कीजिए? (गिनती 14:30–34)
2. एक व्यक्ति के रूप में कालेब में क्या विशेषताएं (गुण) थी?
3. कालेब अनाकियों (दानव) से क्यो भयभीत नही था?
4. आप बताएं कि किस प्रकार परमेश्वर के वायदो पर विश्वास करने के द्वारा आपको अपने मसीही जीवन में दानवो के ऊपर विजय प्राप्त करने में मदद मिली?
5. अविश्वासयोग्यता के कारण पीड़ाओं को आपने कैसे देखा है, इसका वर्णन करे?

तीसरा और चौथा दिन– यहोशू अध्याय 16–19 को पढ़े। भूमि (देश) का बंटवारा करना।

1. शीलोह का क्या महत्त्व है (शीलोह का अर्थ है बसा हुआ)? इब्रानियों 9:1–5 और 1 शमूएल 4:3–5
2. मिलापवाले तम्बे का क्या महत्त्व है?
3. इफिसियों 4:19–22 के अनुसार, मिलापवाले तम्बू का स्थान आज किसने ले लिया है?
4. परमेश्वर की इच्छा हमेशा अपने लोगो के साथ रहने की है। आज आप परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द कैसे उठाते है? (भजन 16:11)

पाँचवा दिन– यहोशू अध्याय 20 पढ़े

1. शरणस्थान के नगरो का वर्णन करे जिन्हे हमारे दया के परमेश्वर ने दिया है?
2. व्यवस्थाविवरण 18:1–5 पढ़े और बताएं कि लेवी कौन थे तथा उनकी विरासत (मीरास) क्या है?
3. परमेश्वर ने आपको 'शरणस्थान का एक नगर' दिया है। वह आप शरणस्थान, गढ़ और शांति है। आपके लिए इसका क्या अर्थ है? (देखे भजन संहिता 91)

4. परमेश्वर द्वारा कितने वायदे पूरे किया गए, उनमें से कुछ के नाम लिखें? (देखें उत्पत्ति 12:2, 3, 7; 15:5, यहोशू 1:5)
5. यह आयत (बात) आपको किस प्रकार उत्साहित करती है? (इब्रानियों 13:8)

"परमेश्वर के वायदे हमारी मीरास के रूप में प्राप्त करने के लिए है"।

यहोशू अध्याय 5
यहोशू अध्याय 21–24
मुख्य वचनः यहोशू 24:15(b) "परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित् करूँगा"।

पहला दिन
यहोशू अध्याय 21 पढ़े
1. लेवी किसके वंशज थे?
2. इन अंतिम आयतो में पूर्ण हुए कुछ वायदो के नाम लिखें।
3. इस अध्याय से हम परमेश्वर के विषय में क्या सीखते है?

दूसरा दिन– यहोशू अध्याय 22:1–9 पूर्वी गोत्र वापस अपने घर आते है।
1. पूर्वी गोत्रो ने किसकी मदद करी और उसका उन्हे क्या प्रतिफल मिला?
2. जब यहोशू ने उन्हे आशीष दी तो परमेश्वर की ओर से उन्हे क्या आज्ञा दी?
3. क्या यह आज भी हमारे लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण है? (मत्ती 22:32; लूका 10:27–28)

तीसरा दिन– यहोशू अध्याय 22:10–34 पढ़े
1. वेदी का किसने बनाया तथा यह कहाँ थी और कितनी बड़ी थी?
2. इस वेदी के लिए क्या वर्णन तथा उद्देश्य है?
3. जब आप इस्त्राएलियों के पापों को स्मरण करते है, तो वो किस प्रकार से काफी परेशानी करने वाले थे?
4. इस प्रत्युत्तर से हम क्या सीख सकते है तथा अगली पीढ़ी के लिए हमारी क्या जिम्मेदारी है?

चौथा दिन– यहोशू अध्याय 23 पढ़े
1. यहोशू ने किसको और कब लोगो को इकट्ठा करने के लिए कहा?
2. कौनसे महत्त्वपूर्ण निर्देश यहोशू ने लोगो को दिए?
3. यहोशू की ओर से क्या चेतावनी दी गई है?

पाँचवा दिन– यहोशू अध्याय 24 पढ़े।
1. परमेश्वर की उन गतिविधियों का सूची बनाओ जिनके बारे में यहोशू चाहता था कि लोग उन्हे स्मरण रखे (आयत 1–13)?
2. परमेश्वर का भय मानना तथा खराई से उसकी सेवा करने का क्या अर्थ है? आप क्या समझते है?

3. आयत 19 में परमेश्वर के कौनसे गुण (चरित्र) बताए गए है?
4. उस चेतावनी का नाम लिखे जो यहोशू ने दी थी?
5. यदि वे वापस फिर (मुड़) जाऐं तो उसके क्या परिणाम होंगे?
6. कैसे वे लोग तथा हम भी अपना ध्यान परमेश्वर पर केन्द्रित रख सकते है?
7. क्या आप किसी ऐसे कारण (बात) की पहचान कर सकते हो जो आपको सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर का अनुकरण करने से रोकती है?

"इस संसार में विजय प्राप्त करने के लिए अगली पीढ़ी को दर्शन से भरना तथा सामर्थी बनाना जरूरी है।"